वर्ष 64 अंक 3-4
ISSN 2231-2439
जुलाई-दिसम्बर 2020

प्रौढ़ शिक्षा

प्रौढ़, सतत एवं आजीवन शिक्षा जगत
का मुख पत्र

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

1939 में स्थापित भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता में अभिवृद्धि करना है, जिसे यह निरंतर तथा आजीवन प्रक्रिया के रूप में देखता है। संघ प्रौढ़ शिक्षा को एक प्रक्रिया, कार्यक्रम और आन्दोलन के रूप में गतिशील बनाने की दिशा में प्रतिबद्ध है। संघ शिक्षा के प्रसार में कार्यरत स्वयसेवी संगठनों, विश्वविद्यालयों, शासकीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के कार्यकलापों में समन्वय करता है। संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों का आयोजन और प्रौढ़ शिक्षा के विभिन्न आयामों पर निरंतर सर्वेक्षण तथा शोध के साथ, संघ अपने सदस्यों की प्रौढ़ शिक्षा तथा आजीवन अधिगम विषयक जानकारी में नवीनता एवं प्रखरता बनाए रखने के लिए समूचे विश्व में अद्यतन विचार और अनुभव प्रस्तुत करने का सतत् प्रयत्न करता रहता है। प्रौढ़ शिक्षा के विविध क्षेत्रोंमें अनुसंधान हेतु विभिन्न प्रयोगात्मक परियोजनाएं भी संचालित करता है। अपनी नीतियों के अनुसरण में संघ ने प्रौढ़ शिक्षा में उत्कृष्ट कार्य हेतु 'नेहरू साक्षरता पुरस्कार' एवं 'टैगोर साक्षरता पुरस्कार' की स्थापना की है।

डा. जाकिर हुसैन स्मृति व्याख्यान प्रतिवर्ष किसी मूर्धन्य शिक्षाविद् द्वारा दिया जाता है। संघ हिन्दी और अंग्रेजी में शोघ कार्य के लिए डा. मोहन सिंह मेहता फेलोशिप भी प्रदान करता है। संघ का अमरनाथ झा पुस्तकालय प्रौढ़, सतत् और जनसंख्या शिक्षा की संदर्भ सामग्री की दृष्टि से देश में अद्वितीय है। विविध संदर्भ–पुस्तकों के संकलन के अतिरिक्त देश और विदेश से प्रकाशित प्रौढ़ शिक्षा और आजीवन अधिगम संबंधी पत्र–पत्रिकाएं, सूचना एवं सदर्भ सामग्री भी संघ के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य हेतु संघ की पहल पर प्रौढ़ एवं जीवनपर्यन्त शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान (इंटरनेशलन इंस्टीट्यूट ऑफ एडल्ट एंड लाईफलॉंग एजूकेशन) की स्थापना वर्ष 2002 में हुई। संघ प्रौढ़ शिक्षा और आजीवन अधिगम विषय पर पुस्तकें तथा पत्रिकाएं प्रकाशित करता है, जो कि मुख्यतः प्रौढ़ शिक्षा कर्मियों और उसमें रुचि रखने वाली संस्थाओं और व्यक्तियों के लिए है। संघ 'इंटरनेशलन फेडरेशन आफ वर्कर्स एजूकेशन एसोसिएशन्स', एवं एशियन साउथ पैसेफिक एसोसिएशन फॉर बेसिक एण्ड एडल्ट एजूकेशन', 'इंटरनेशनल कौंसिल आफ एडल्ट एजूकेशन तथा 'इंटरनेशनल रीडिंग ऐसोसिएशन' से भी सम्बद्ध है। संघ की सदस्यता उन सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं के लिए खुली है, जो इसके आदर्शों एवं लक्ष्यों में विश्वास रखते हैं और इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए इच्छुक हैं।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

17–बी इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, महात्मा गांधी मार्ग, नई दिल्ली–110002

दूरभाषः 011–23379282, 23378436, 23379306

फैक्सः 011–23378206, ई–मेलः directoriaea@gmail.com

website: www.iaea-india.org; www.iiale.org

# ik< f'k{kk जुलाई – दिसम्बर 2020 वर्ष 64 अंक–3–4 ## lEiknd e.My प्रो. भवानीशंकर गर्ग (संरक्षक) श्री मृणाल पंत श्री ए.एच.खान डा. सरोज गर्ग श्री दुर्लभ चेतिया डा. डी.के.वर्मा डा. उषा राय डा. मदन सिंह श्री एस.सी. खंडेलवाल श्री राजेन्द्र जोशी **i/kku lEikfnd** श्री कैलाश चौधरी **lEikind** डा. मदन सिंह **lgk;d lEikind** बी. संजय	# bl vad e lEikndh; dkfoM & 19 % u; y{;] u; vnkt] uo fuek.k ,o ubl jkg – कृष्ण कुमार आहूजा 4 jk"Vh; f'k{kk uhfr 2020 % ik< vkj vkthou f'k{kk dk Hkkoh Lo:Ik –बी. संजय 10 fo|ky;h okrkoj.k dk fo|kfFk;k dh 'kf{kd fprk ij iHkko – अभिषेक श्रीवास्तव – आर. एन. लाल श्रीवास्तव 15 u'k d opLo e mnh;eku f'k{kkFkh – वीरेन्द्र जैन 30 lkekftd 'kk/k v/;;u e 'kk/k ifof/k dk i;kx & कृष्ण कुमार केशरवानी – जय प्रकाश सिंह 34 cfu;knh rkyhe l ubl f'k{kk uhfr rd – जगमोहन सिंह राजपूत 43 fiV – विष्णु भट्ट 46 gekj y[kd 48 eY;% :i; 200@&okf"kd if=dk e 0;Dr y[kdk d fopkj mud o;fDrd fopkj g] ftud fy, l?k ,o lEikind dh lgefr vfuok;l ugh g A

t:jr gS izkS< vkSj vkthou f'k{kk dks izeq[krk iznku djus dh

अध्यापकों को सम्मानित करने तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को क्रियान्वयन के दृष्टि से आगे ले जाने के लिए इस वर्ष देश में शिक्षक पर्व मानाया गया। अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस 8 सितम्बर से लेकर 20 सितम्बर, 2020 तक चले इस शिक्षक पर्व के दौरान शिक्षा मंत्रालय, विविध शैक्षिक संस्थाओं तथा राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस), राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी), नेहरू युवा केन्द्र संगठन (एनवाईकेएस), उन्नत भारत अभियान (यूवीए) वालिंटियर्स जैसे संस्थानों द्वारा स्वतंत्र या सयुंक्तरूप से अनेकों वेबिनार, कार्यशालाएं, सम्मेलन अथवा अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान आयोजित चर्चाओं में 'मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता', 'समग्र और बहुविषयी उच्च शिक्षा के माध्यम से ज्ञान (आधारित) समाज का निर्माण', 'समग्र और बहुविषयी शिक्षा के साथ युवाओं का सशक्तीकरण', 'बहुविषयी और समग्र दृष्टिकोण के जरिए उच्च शिक्षा में बदलाव', 'भारतीय भाषाओं का संवर्धन', 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्राध्यापकों के विकास हेतु पहल', '21वीं सदी में स्कूली–शिक्षा', 'कला एकीकृत और खिलौना एकीकृत शिक्षाशास्त्र', 'कोई कठोर अलगाव नही', जैसे विषयों को प्रमुखता से शामिल किया गया। इन वेबिनारों को राष्ट्रपति, उप–राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, शिक्षा मंत्री सहित अनेकों अधिकारियों एवं बुद्धिजीवियों ने संबोधित किया। पर इन आयोजनों का कलेवर देखने से ज्ञात होता है कि प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा को अपेक्षित प्रमुखता प्रदान किया जाना अभी भी शेष है।

विदित है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा संबंधी नीति निदेशक तत्वों का उल्लेख करते हुए एडल्ट एजुकेशन करिकुलम फ्रेमवर्क के निर्माण और क्रियान्वयन की बात कही गई है ताकि शत प्रतिशत साक्षरता के लक्ष्य को निर्धारित अवधि में प्राप्त किया जा सके और साथ ही साथ समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के सशक्तीकरण के स्वप्न को भी साकार किया जा सके। यहां यह अपेक्षा व्यक्त की गई है कि आने वाले समय में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को अत्यंत विकसित स्वरूप प्रदान करने की कोशिश की जाएगी जहां साक्षर बनने का आग्रही हर व्यक्ति चाहे वह उम्र के किसी भी पड़ाव पर खड़ा हो अथवा समाज के किसी भी तबके से आता हो उसका स्वागत होगा तथा उसे अक्षर एवं अंक ज्ञान के साथ ही साथ उसके पसंदीदा विषय विशेष में ऐसी व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान की जाएगी जिससे की व्यक्ति लाभप्रद्र रोजगार प्राप्त कर अपने तथा अपने परिवार का उचित भरण–पोषण कर सके तथा वर्तमान समय और पीढ़ी के साथ कदम से कदम मिला कर चल सके। इतना ही नहीं संभव हो तो स्वरोजगार स्थापित करे तथा स्वयं को स्वावलम्बी बनाने के साथ ही कई अन्य आग्रही व्यक्तियों को भी रोजगार प्रदान करे। इस

करिकुलम फ्रेमवर्क के निर्माण हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के तहत एक उच्च अधिकार प्राप्त समिति के गठन करने की बात कही गई है जो इस परिकल्पना को अम्लीजामा पहनाने का कार्य करेगी। यहां पर यह स्पष्ट नहीं है कि इस पूरे प्रयास में प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय की भूमिका क्या होगी ?

बहरहाल, यहां पर यह उल्लेख करना आवश्यक होगा कि 'साक्षर भारत कार्यक्रम' के संदर्भ में 'नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर एडल्ट एजुकेशन' की रूपरेखा तैयार करने के लिए 30 मार्च 2010 को राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के तत्कालीन अध्यक्षा शांता सिन्हा के नेतृत्व में विशेषज्ञों की एक समिति गठित की गई थी। इस समिति ने एक विस्तृत कार्ययोजना के तहत विकसित ड्राफ्ट रिपोर्ट भी मंत्रालय को सुपूर्द किया था। ऐसे में यह उम्मीद की जा सकती है कि वर्तमान में जब नये सिरे से एडल्ट एजुकेशन करिकुलम फ्रेमवर्क तैयार करने की बात की जा रही है तो पूर्व में गठित समितियों के सुझाव एवं अनुभवों का भी समुचित उपयोग किया जाएगा।

– बी. संजय

कोविड – 19 : नये लक्ष्य, नये आगाज, नव निर्माण एवं नई राहें

– कृष्ण कुमार आहुजा

यह समय लाचारगी का नहीं है और इसलिए लाचारगी के अहसास को एक किनारे रख दें। यह निर्माण का समय है। संभावनाएं भी अनगिनत हैं। 'क्या नहीं हो सकता' के बजाय यह सोचिए कि 'क्या हो सकता है'। जरूरत है तो बस नए दृष्टिकोण से देखने की। क्योंकि जैसा कि कहा भी गया है नजरिया बदलें तो नजारे भी बदल जाते हैं। यह हम पर मुनस्सर करता है कि इस मुश्किल दौर को बड़ी आसानी से सकारात्मक और सार्थक कैसे बनाएं। बच्चों को वर्चुअल वर्ल्ड की वास्तविकता से सजग रखें, उन्हें बताएं कि वीड़ियों कॉल, वाटसअप, ऑनलाईन पढ़ाई आदि अस्थायी विकल्प हैं। हालात सामान्य होने पर सब सही हो जायेगा। प्रकृति से तादात्मय स्थापित करने का बच्चों के लिए यह सुनहरा मौका है। बच्चों को कुदरत से नये तरीकों से जुड़ने का अवसर भी है। यह ध्यान रखें कि शारीरिक दूरी जरूरी है, न कि भावनात्मक। यह समय कई सामाजिक मनोवृत्तियों में बदलाव का भी है। आज जब बच्चें माता–पिता को एक दूसरे के कामों में सहभागिता करते दिख रहें हैं तो शायद सदियों से चली आई धारणाऐं भी बदल रही हैं कि कुछ काम स्त्रियों के लिए ही हैं अथवा कुछ कार्य पुरुषों के लिए ही है। अर्थात वर्षों से चली आ रही स्टीरियोटाइप्स के टूटने की रफतार तेज हो गई है। सभी मिलजुल कर काम करते नजर आ रहे हैं। बुनियाद के तौर पर बच्चों को कोविड़–19 के बारे में जानकरी दें, ऐसे कि वे डरे नहीं पर सचेत जरूर रहें। घर से काम कीजिए। इस समय यह हमारी जिदंगी का एक जरूरी हिस्सा हो गया है। लेकिन 'दिल से काम कीजिये' यह उससे भी ज्यादा जरूरी है। क्यों न अपने आपको भीड़ से सुरक्षित रखें। इस एकाकीपन में अच्छे–अच्छे कार्यो को अंजाम दें। यदि आप व्यावसायी हों तो ईमान से काम कीजिए, नौकरशाह हों तो ज्ञान से, युवा हैं तो अरमान से, बुजुर्ग हैं तो शानौं–शौकत से और यदि आप सामान्य नागरिक भी हैं तो भी बड़ी सावधानी का परिचय देकर काम करने की आदत डालें।

कोरोना चुनौतियों भरा तो है पर हमें इन चुनौतियों में भी अवसर तलाशने होंगे। कोरोना से सामुहिक सुरक्षा की खातिर घरों में रहने की आवश्यकता को नजरअंदाज न करें। इस दौरान लोगों ने अपने समय को परिस्थितियों के अनुकूल शानदार ढंग से ढ़ाल लेने के लिए सब कुछ बदल दिया है। समय के पांव तले दबे खेल जैसे कैरम बोर्ड, सांप सीढ़ी, लूड़ो अब काफी लोकप्रिय हो रहे हैं। ताश के खेल ने तो कमाल ही कर रखा है। ताश के पत्तों से ब्रिज, तीन पत्ती, रमी, चौकड़ी एवं बादशाह कूट इत्यादि खेल खेले जाते हैं। इसमें एक और उपलब्धि वाला खेल है जिसे पेशेन्स कहा जाता है। यह ऐसा खेल है जिसे व्यक्ति अकेला ही खेल सकता है। खेल का हिन्दी अनुवाद है धीरज, संयम जो कि इस जीवन का शाश्वत मूल्य भी होता है। इस खेल में कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं होता परंतु स्वयं से छाया युद्ध लड़ने की

तरह यह खेल खेला जाता है। इस तरह पेशेन्स नामक यह खेल खुद की तलाश माना जा सकता है जो कि इस मानव देह में आने का सर्वोत्तम विचार है। अपने आपको पहचानना KNOW THYSELF आत्मानं विद्धि। इन खेलों के बारे में कहा जाता है कि ''दिल ने दिल से बात की, बिन चिट्ठी, बिन पाती, बिन तार''।

कोविड़–19 के दौरान हमें ऐसे बदलाव करने चाहिए जो स्वयं हमारे लिए तथा हमसे जुड़े संस्थानों के लिए उपयुक्त हों। क्योंकि हम सभी बदलती जरूरतों के अनुसार फैसले ले रहे हैं। यदि ये फैसले स्मार्ट भी होंगे तो यह सोने पर सुहागा होगा। विश्व–बैंक ने भारत पर लॉकडाऊन के संभावित असर पर रिपोर्ट जारी की है। विश्व बैंक के अनुसार भारत की लगभग 1.2 करोड़ आबादी भीषण गरीबी में चली जायेगी। विशेषज्ञों के अनुसार भारत में जितने लोग कोरोना वायरस इंफेक्शन से मरेंगे, उससे ज्यादा गरीबी और भूख से मरेंगे। यह सही है कि ज्यादा लम्बे इंतजार से निराशा होती है। हमें इस समय धैर्य की जरूरत है। लेकिन इसका मतलब इंतजार करना नहीं होता बल्कि इंतजार के दौरान सही मनोभाव रखना भी होता है। हमें उम्मीद का दामन कभी नहीं छोड़ना चाहिए। उम्मीद भी इतिहास केन्द्रित होनी चाहिए न कि भावना केन्द्रित। भारतीय सिनेमा संस्कृति में एक बहुत ही पुराना गीत है – ''गम की अंधेरी रात में दिल को न बेकरार कर, सुबह जरूर आयेगी, सुबह का इंतजार कर'– सुबह का इंतजार करना होगा। लेकिन होगी वह अपने हिसाब से ही। इसी तरह परिस्थितियां अपने हिसाब से बदलती हैं। दुनियां में कोरोना वायरस जैसी महामारियां तथा समस्याएं पहले भी आ चुकी हैं और हम इनसे बाहर निकले भी हैं। यही इतिहास केन्द्रित उम्मीद अब भी बनी रहे इसकी आज विशेष आवश्यकता है। अपने विचारों पर फोकस करें। उनमें शालीनता, सुन्दरता एवं सकारात्मकता लाएं, क्योंकि हमारे विचार शब्दों में ढ़ल जाते हैं, शब्दों पर ध्यान दे ंतो वे कार्यों में बदल जाते हैं, कार्यों पर ध्यान दे ंतो वे आदतों में बदलते हैं। आदतों पर ध्यान दे ंतो वे आपकी किस्मत बदलते है। यानी सभी कुछ तो विचारों से ही शुरू होता है। विज्ञान भी यही कहता है कि पहले विचार ही उत्तपन्न होते हैं। इसलिए उनमें सकारात्मकता लाना बहुत जरूरी है।

भारतीय संस्कृति में तो विषम परिस्थितियों में मुकाम तक पहुंचने की कला निहित है। हमारे अंदर क्षमता है, और हम उस क्षमता को जितना पहचानेंगे, उतना ही हम जीवन को रीडिजाइन और रीस्टार्ट कर पायेंगे। जीवन के हर क्षण को महत्वपूर्ण बनाएं। इस क्षण के लिए सजग, सचेत और जीवंत हो जाये। हर क्षण के बाद अगला क्षण अवश्य आयेगा। इसलिए हर क्षण को उपयोगी बनाएं, तथा हर क्षण जीवन की पूर्णता के साथ जिएं और इस वर्तमान जीवन को जीवंत बनाएं। जीवन एक सतत् प्रवाह है। इसके हर पल को जिए, इसके हर पल का पूरा उपयोग करें। कोरोना वायरस से बाहर निकल कर न्यू नॉर्मल अपनाना हमारे लिए कौन सी नई बात है। हमारी सनातन संस्कृति ने नवीन परिस्थितियों के साथ स्वयं को ढाल लेने की क्षमता हममें पहले से ही जागृत किया हुआ है। जैसे शुरू–शुरू में पैदल ही

चलना होता था, फिर बैलगाड़ी, फिर रेल गाड़ी, फिर वायुयान आया और हम सब इसे खुशी–खुशी अपनाते गये। अपने जीवन में आए नये व्यावधानों को ही नहीं बल्कि संसाधनो को भी हम आत्मसात करते रहे। शुरूआत में थोड़ी मुश्किलों का सामना जरूर करना पड़ा, लेकिन देखते ही देखते हम थोड़ी अनुकूलता लाकर इसे अपना लेते हैं। पहले पहल जब औद्योगिक क्रांति आई तो लोग जीने के लिए नौकरी करने लगे। अब हम डिजिटल और सोशल क्रांति को अपना रहे हैं, क्योंकि जब खुद के लिए कुछ चुनते हैं तो सकरात्मकता आती है। जैसे अगर डॉक्टर कुछ खाने से मना करें तो हमें कुंठा होती है लेकिन जब हम स्वयं यह निर्णय लेते हैं कि हमें डाइटिंग करना हैं तो हम उम्मीद के साथ आगे बढ़ते है। यदि हम चीजों को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखें तो कुछ न कुछ अच्छा ही निकलेगा। चाहे वह निजी स्तर पर हो या ग्लोबल स्तर पर'। इसलिए आज से पॉजिटिव सेल्फ टॉक शुरू कीजिए। अकेले में खुद से कहिए कि मैं जो भी काम करूंगा, वो पूरा करके ही दम लूंगा। मैं जब किसी मंजिल को पाने की लिए निकलता हूँ, तो पाकर ही लौटता हूँ, अपने अवचेतन मस्तिष्क को वो सेल्फ टॉक वाला ऑडियों बार–बार सुनाइये तो वो कहानियां अपने अंदर पंजीकृत हो जायगी।

जरूरी सबक यह है कि जैसे – जैसे दुनियां आपस में ज्यादा गहराई से गुंथती जा रही है, हर किसी के व्यवहार का महत्व भी बढ़ता जा रहा है। उन मूल्यों का महत्व और अधिक बढ़ रहा है जिन्हें एक–दूसरे पर निर्भर इस दुनियां में हम लाते हैं और इसी के साथ ही 'गोल्डन रूल' भी पहले से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। यानि दूसरों के साथ वैसा ही बर्ताव करें, जैसा बर्ताव हम अपने साथ चाहते हैं। इसे ही सही मायनों में कर्तव्य अथवा ड्यूटी की संज्ञा दी गई है। कर्तव्य क्या हैं? कर्तव्य दूसरों के प्रति किया वह व्यवहार है जो हम दूसरों से अपने प्रति चाहते है। अतः हमें जीवन मूल्यों की पढ़ाई करनी है। देश रूपी शरीर की अंतड़ियों में रिश्वत नामक रोग अमीबा की तरह सिस्ट बनाकर रहती है। एक मारो तो दूसरा पैदा हो जाता है। भारतीय सरस्कृति में, वेदों, शास्त्रों में, पुराणों में, ग्रंथो में, वाड्मंय में प्रत्येक समस्या का निदान वर्णित है। आयुर्वेद में लिखा है कि मोटी सौंफ का सेवन अमीबा सिस्ट को तोड़ता है। पर जीवन मूल्यों की मोटी सौंफ कहां से लाएं? इसका उत्पादन मनुष्य को स्वयं से शुरू करना होगा। आप विचार कीजिए जब धूना वर्जित हो जाये और जीवन के लिए जरूरी सांस भी जोखिम भरी हो जाये तो पूरी मानवता ही मुश्किल में आ जाती है। जब तक वायरस को रोक नहीं लिया जाता तब तक कोरोना के साथ जीने वाली स्थिति रहेगी। इसके लिए 'पॉज' बटन की नहीं अपितु 'रीसेट' बटन की जरूरत है। मन और जीने के तरीकों को रीसेट करना होगा। क्योंकि कोरोना वायरस के फैलने से एक व्यक्ति के स्वास्थ्य की दूसरे की स्वास्थ्य पर निर्भरता का जरूरी अंतरसंबध सामने आया है। यही अब हमारे रवैये और व्यवहार का आधार होगा। हमें सोशल डिस्टेंसिग बनाये रखते हुए एक दूसरे से सार्थक ढंग से जुडनें और हर संभव सहायता करने की जरूरत है। कुल मिलाकर कोरोना वायरस हमारे लिए शॉक ट्रिटमेंट की तरह है। यह हमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और वैश्विक

दृष्टिकोणों को रिसेट करने के अलावा एक दूसरे और प्रकृति संग एकता कायम रखने की याद भी दिला रहा है और हिदायत भी दे रहा है। कितना बदलाव आया है कि क्लासरूम की जगह अब घरों ने ले ली है, कॉरपोरेट जगत का सारा काम वर्क फ्रोम होम हो गया है।, सेमिनार वेबिनार में बदल गये हैं। एक स्वस्थ लाइफ उभर कर सामने आ रही है। हॉलांकि इन साधनों तक सभी की बराबर पहुंच अभी मुद्दा है फिर भी कोरोना के साथ जीने के लिए नई आदतों का होना जरूरी है।

D;k oDr gS\ D;k oDr dh utkdr gS\ ;q x cny x;k] tx cny x;k] fdruh cny x;h nqfu;k] pan fnuksa esa ,d ck.kxh nsf[k;s & ^^igys ykx dgrs Fks fuxfVo yksxksa ls nwj jgks] vc dgrs gSa ikftfVo yksxksa ls nwj jgksA** ऐसे चुनौतियों भरे समय में अवसर को तलाशें। इसलिए सबसे पहले भविष्य के भय से मुक्ति पायें। अब, क्योंकि आप बाहर निकलकर एक नए रूप में संघर्ष करेंगे तो कई बार हार का सामना भी करना पड़ेगा। यह हार व्यक्ति को अकेलेपन में डाल देती है और ऐसे लोग जिन्हें इस एकाकीपन से, सूनेपन से ज्यादा डर लगता है तो कुदरत भी उनके हिस्से में लम्बी वीरानगी डाल देती है। तभी तो अनुभवी व्यक्ति कह रहे हैं कि इस लंबे लॉकडाउन के बाद जब भी घरों से काम आदि करने हेतु निकलें तो बाहर सावधानी से ही कदम रखे। एक तरफ लाइलाज बिमारी है तो दूसरी ओर परिवार के प्रति आपकी अनगणित जिम्मेदारियां भी हैं। खुद स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें, जागरूक रहें, ऐसा न हो कि अनजाने में कोई चूक हो जाये और कोई नई मुसिबत घर पर दस्खत ले आये। पर इसका यह मतलब कतई नहीं कि कोई काम ही न करें, हाथ पर हाथ रखकर ही नही बैठ जाना है, निर्भय होकर अनुशासन में रहना है, क्योंकि यदि आप ऐसा करने में कामयाब हो जाते हैं तो आप में एक बहुत बड़ी योग्यता पनपने लगती है। कुछ माह पहले किसी ने सोचा था कि ऐसे भी दिन आयेंगे। इसीलिए लेखक का मानना है कि हमें मन में यह ठान लेना है कि जो भी स्थिति बनेगी उसका दृढ़ता से, एक जुट होकर सामना करेंगे।

जिसे चुनौतियों के भंवर में अवसरों से मुलाकातें करनी आ गई, समझिए उसने विषम परिस्थितियों पर विजय पताका फहरा दी। तालाबंदी के समय यह सब कुछ समीप से देखने का मौका ही नहीं मिला अपितु हम और आप ने स्वयं अनुभव भी किया है। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। कोरोना वायरस के दौरान हमने अभाव और परेशानियों से भरी विकट परिस्थितियों का सामना किया है, पर कई दृष्टिकोणों से हम सभी लाभान्वित भी हुए हैं। प्रकृति की सेहत में जो रौनक, चहल–पहल, सौन्दर्य, चमक तथा स्वच्छ एवं सुंदरता इस दौरान आई है वह पहले हमारे तथा हमारे पूर्वजों के काल में भी शायद इतनी नहीं आई होगी। इन दिनों प्रकृति बहुत निखरी हुई और बहुत ही खुशनुमा नजर आ रही है। दिन–रात कल कारखानों से भयंकर शोर सुन–सुन जिस पर्यावरण के कान रूंध गये थे, फैक्ट्रियों से उगलने वाले जहर के बादल, जिसकी एक–एक सांस को दुश्मन बन गये थे, कोरोना काल के ठहराव

और खामोशी ने उसे मानों नवजीवन प्रदान कर दिया हो। कारण चाहे कोई भी रहा हो अब हम कम से कम स्वच्छ एवं स्वस्थ सांसे ले पाने की अवस्था का आनंद ले रहे हैं। आज हमारे सामने यह संकल्प लेने का दिन है कि हम सभी अपनी उस सनातन एवं पुरातन संस्कृति को अपनी जीवनचर्या का आधार बनाए जिसने हमें सिखाया है कि धरती हमारी मां है और हम उसके पुत्र। हमारे यहां नदियों को मां का दर्जा दिया गया है। समुद्रों, पहाड़ों तथा वनों को सुरक्षित रखने का पाठ पढ़ाया गया है। इस प्रकार से हम अपनी सोच, व्यवहार एवं क्रियाकलापों से आने वाले समय में भी पर्यावरण को ऐसे स्वच्छ, स्वस्थ और निर्मल रखेंगे। प्रकृति तो हमेशा हमें देती ही है। वास्तव में प्रकृति हमें कुछ देकर आनन्दित होती है। आप देखेंगे कि फल देने वाले वृक्षों को पत्थर मारने पर भी वे हमें ताजे, मीठें और रंग–बिरंगे फल प्रदान करना नहीं छोड़ते। यदि स्वयं को, समाज को और राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाना है तो हमें प्रकृति के समीप, प्रकृति की गोद में, प्रकृति के सानिध्य में जीवन बिताना होगा। हमें प्रकृति का मान और सम्मान करना होगा। यह तो सही है कि इस कोरोना काल से हम शायद जल्दी ही आजाद हो जायेंगे, परंतु हमें इतनी सावधानी तो रखनी ही पड़ेगी कि हम एक दम अनियंत्रित न हो जाये। सयंम में रहकर सहजता से धीरे–धीरे खुलेपन का आनन्द लेना होगा, वरना प्रकृति देते समय जितनी उदार होती है लेते समय उस से लाख गुणा क्रूर भी हो सकती है।

निदा फाजली के एक गजल की शुरूआती पंक्ति यहाँ एक दम सटीक बैठती है % बारूद के ढ़ेर पर बैठी है यह दुनिया और माचिस पहरेदार है। विश्व के सबसे बड़े प्रजातंत्र भारत में बोलने की आजादी सभी को है, पर जब भी बोलें, सार्थक बोलें। बेकार बोलने से ज्यादा अच्छा चुप रहना साबित हो सकता है।

देश के इतिहास में ऐसे क्षण भी कई बार आते हैं, जब स्वाभिमान के समक्ष अस्तित्व का संकट भी छोटा लगता है। ऐसे समय में गीता में श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दी गई शिक्षा ''हतो वा प्राप्यसि स्वर्गम्, जित्वा वा भोज्यम से महीम'' (अर्थात मर गये तो स्वर्ग मिलेगा और जीते तो समस्त पृथ्वी पर राज) को ही मंत्र मानकर फैसले लेने होते हैं। भारत के युवा तो चुनौतियों को अवसर में बदलने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। इसलिए वे सदैव चुनौतियों में समाधान खोजने को आतुर रहते हैं और इसे ही अपना लक्ष्य बना उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की कोशिश करते हैं। कोरोना काल के दौरान विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय सहित अन्य सभी शैक्षणिक संस्थान ही नहीं बल्कि दुकान, बाजार, फैक्ट्री सभी कुछ तो बंद हो गए हैं। ऐसे में युवाओं की शिक्षा पर इसका विपरीत असर न पड़े यह एक बड़ी चुनौति है। इस स्थिति से ऊभरने के लिए सरकार एवं शैक्षिक संस्थानों के प्रशासकों ने दूरदर्शन, स्मार्टफोन, मोबाईल फोन एवं विविध प्रकार के एप के माध्यम से शिक्षा जारी रखने का फैसला लिया है। इससे शैक्षिक प्रक्रिया को चालू रखने में एक हद तक सफलता भी मिली है। यहां हम ये मान कर चलते हैं कि देश के अधिकतर युवाओं के पास मोबाइल हैं, पर आज भी देश के कुछ इलाकों,

खासतौर पर दूर दराज के अंदरूनी इलाकों में इंटरनेट से जुड़ाव आदि काल की तरह ही है। कुछ जगहों पर इंटरनेट नेटवर्क पकड़ सके इसके लिए युवाओं को न सिर्फ ऊँची पहाड़ी पर चढ़ना पड़ता है अपितु पहाड़ी की चोटी पर चढ़कर पेड़ तक पहुंचना होता है। तब कही इंटरनेट में नेटवर्क आ पाता है। 'जूम' के जमाने में श्रीराम हेगड़े नाम का एक नवयुवक पढ़ाई के लिए पेड़ पर झूमता पाया गया। एम.ए. का छात्र श्रीराम हेगड़े को बेंगलुरू से 400 किमी पश्चिम में स्थित ऊत्तर कन्नड़ जिले के अपने गांव बक्कल में ऑनलाइन क्लास अंटेड करते हुए पता चला कि शिक्षा वास्तव में पहाड़ की चढ़ाई जैसी हो सकती है। जैसे हर रोज बच्चे स्कूल या कॉलेज जाते हैं, वैसे ही श्रीराम जैसे युवकों को ऑनलाईन एजुकेशन के लिए पहाड़ी पर चढ़ाई कर एक पेड़ पर चढ़ना पड़ता है। इस बारे में शिकायत करने के बावजूद ये युवा तकनीक का अधिकतम इस्तेमाल करते हुए अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहते हैं। वास्तव में इस दौर को शिकायत करने वाले नहीं बल्कि समस्याओं का समाधान खोजने वालों की जरुरत है। कठिन समय में मौलिक प्रश्नों का समाधान खोजना व्यक्ति के जीवन का उद्‌देश्य भी बन सकता है।

<u>lUnHkZ %</u> ekpZ 2020 ls tqu 2020 rd fofHkUu lekpkj i=ksa esa izdkf'kr dksfoM&19 ls lEc) fo'ks"k ys[k] fVIi.kh;k¡ ,oa lEikndh; ls ,df=r dh xbZ lkexhA

▼ आजादी के सर्वोच्च रुप के साथ ज्यादा से ज्यादा अनुशासन और नम्रता होनी चाहिए। दोनों का अटूट संबंध है। अनुशासन और नम्रता से आई हुई आजादी ही सच्ची आजादी है। अनुशासन से अनियंत्रित आजादी, आजादी नहीं है, स्वेच्छाचारिता है उससे स्वयं हमारे पडोसियों के खिलाफ अभद्रता सूचित होती है।

▼ हृदय की शिक्षा अथवा नैतिक शिक्षा प्रदान करना ही शिक्षा का प्रधान कार्य है और इसी में शिक्षा की सार्थकता है। यदि हम व्यक्ति का चरित्र उन्नत करने में सफल हो जाते हैं तो समाज स्वतः ही सुधर जाएगा।

egkRek xka/kh

jk"Vªh; f'k{kk uhfr 2020 % izkS<+ vkSj vkthou f'k{kk dk Hkkoh Lo:Ik

& ch- l/t ;

एक लम्बे अरसे तक भारत की सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था सन् 1986 में घोषित 'नई शिक्षा नीति' के अनुरूप संचालित होती रही। इसी दौरान संदर्भ, मांग, तकनीकि तथा अपेक्षाओं की दृष्टि से वैश्विक एवं राष्ट्रीय हालातों में व्यापक और उल्लेखनीय परिवर्तन दर्ज किया गया जिसे संबोधित करने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 जारी की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्वयं प्रभू एवं स्वावलम्बी भारत के निर्माण में प्रौढ़ एवं आजीवन शिक्षा के महती योगदान को स्वीकार करते हुए प्रौढ़ शिक्षा पाठ्यक्रम संरचना (एडल्ट एजुकेशन करिकुलम फ्रेमवर्क) के निर्माण की आवश्यकता को रेखांकित की गई है जो निश्चित रूप से एक स्वागत योग्य पहल है। इस फ्रेमवर्क के निर्माण से प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा के एक और अधिक सुगठित, सुनियोजित तथा समयबद्ध दौर की उम्मीद की जा सकती है जो समाज के अंतिम व्यक्ति के सशक्तीकरण में कारगर सिद्ध हो सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा के स्वरूप के निर्धारण तथा क्रियान्वयन हेतु शामिल मुख्य नीति निर्देशक तत्व इस प्रकार हैं :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति कहती है कि आधारभूत साक्षरता हासिल करने, शिक्षा प्राप्त करने तथा आजीविका अनुसरण करने के अवसर को प्रत्येक नागरिक के मौलिक अधिकार के रूप में देखा जाना चाहिए। यह नीति स्वीकार करती है कि साक्षरता एवं मौलिक शिक्षा के कारण किसी भी व्यक्ति के निजी, सामाजिक, नागरिक तथा आर्थिक जीवन में आजीवन शिक्षा संभावनाओं के रूप में अवसरों का एक नवीन अध्याय शुरू होता है जो उसे व्यक्तिक एवं व्यावसायिक प्रगति के लिए सुदृढ़ बनाता है। सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर देखें तो साक्षरता एवं मौलिक शिक्षा विविध विकासात्मक प्रयासों की सफलता दर को बढ़ाने में एक सशक्त गुणात्मक बल का कार्य करते हैं। यह नीति इस बात को भी रेखांकित करती है कि विश्व के तमाम देशों से प्राप्त आकंड़े साक्षरता दर एवं प्रति व्यक्ति आय के बीच सघन संबंध को प्रदर्शित करते हैं।

यह भी स्पष्ट है कि समुदाय के असाक्षर सदस्यों को तमाम प्रकार के प्रतिकुलताओं का सामना करना पड़ता है जिनमें सामान्य आर्थिक लेन–देन ना कर पाना, भुगतान की जा रही राशि बनाम क्रय किए गए सामग्री की गुणवत्ता एवं मात्रा का तुलनात्मक जायजा ना कर पाना, नौकरी, कर्ज अथवा अन्य सेवाओं के लिए आवेदन पत्र ना भर पाना, समाचार माध्यमों में प्रकाशित लेखों अथवा जनहित में प्रकाशित सूचनाओं को ना समझ पाना, व्यापार करने अथवा उससे संबंधित सवांद के लिए इलेक्ट्रॉनिक मेल एवं अन्य सुगम संचार माध्यमों का उपयोग नहीं कर पाना, अपने जीवन एवं व्यावसाय की प्रगति हेतु इंटरनेट अथवा अन्य

तकनीकि संसाधनों का उपयोग नहीं कर पाना, दवाओं अथवा सड़कों पर दिए गए सुरक्षा चिन्हों अथवा सूचनाओं को नहीं समझ पाना, अपने बच्चों की शिक्षा प्राप्ति में मदद नहीं कर पाना, भारत के नागरिक के तौर पर अपने मौलिक अधिकारों एवं उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक ना होना, साहित्य का आनन्द नहीं ले पाना तथा रोजगार के उच्च उत्पादन क्षमता वाले क्षेत्रों में प्रयास ना कर पाना शामिल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति कहती है कि यह सूची प्रौढ़ शिक्षा के नवाचार के माध्यम से हासिल कर सकने वाले तमाम उपल्बधियों की एक संकेतात्मक सूची मात्र है।

भारत सहित विश्व के अन्य देशों में किए गए अनेकों गहन जमीनी अध्ययन और उनके विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि राजनैतिक इच्छाशक्ति, सांगठनिक संरचना, विस्तृत कार्य योजना, समुचित आर्थिक सहयोग, स्वेच्छासेवकों एवं संदर्भ व्यक्तियों के लिए उच्च स्तरीय क्षमता संवर्धन कार्यक्रम सहित स्वयंसेवी प्रयास, सामुदायिक भागीदारी तथा लामबंदी ही प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रमों की सफलता के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक हैं। सफल साक्षरता कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप ना केवल प्रौढ़ों की साक्षरता दर में बढ़ोतरी होती है बल्कि इसके कारण समुदाय के सभी बच्चों हेतु शिक्षा की मांग, तथा सकारात्मक सामाजिक बदलाव के लिए जन भागीदारी में भी उल्लेखनीय प्रगति होती है। सन् 1988 में प्रारंभ हुआ राष्ट्रीय साक्षरता मिशन वस्तुतः जन सहयोग एवं स्वयंसेवी प्रयासों पर आधारित था जिसके कारण सन् 1991–2011 के दौरान ना केवल महिला साक्षरता सहित सकल राष्ट्रीय साक्षरता दर में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई बल्कि इस दौर के प्रमुख सामाजिक मुद्दों पर चर्चा एवं सवांद भी स्थापित किया जा सका।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति यह प्रतिबद्धता व्यक्त करती है कि प्रौढ़ शिक्षा, विशेषरूप से सामुदायिक सहभाग तथा तकनीक के सहज एवं लाभप्रद उपयोग हेतु सरकार की ओर से यथा संभव शीघ्रातिशीघ्र सशक्त एवं नवाचार आधारित पहल किया जायेगा ताकि देश में शत प्रतिशत साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

यह नीति कहती है कि सर्वप्रथम, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) के एक नवीन और समुचित सहयोग एवं समर्थन प्राप्त घटक द्वारा प्रौढ़ शिक्षा को समर्पित एक 'प्रौढ़ शिक्षा पाठ्यक्रम संरचना (एडल्ट एजूकेशन करिकुलम फ्रेमवर्क)' का निर्माण किया जायेगा ताकि साक्षरता, अंक ज्ञान, मौलिक शिक्षा, व्यावयायिक शिक्षा एवं उत्तरोतर जीवन हेतु एनसीईआरटी द्वारा पूर्व में विकसित ज्ञान कोष और वर्तमान के अधनातुन प्रयोगों के बीच तारतम्य स्थापित किया जा सके। इस प्रौढ़ शिक्षा पाठ्यक्रम संरचना के अंतर्गत कम से कम पांच स्पष्ट रूप से परिभाषित परिणामों वाले कार्यक्रम यथा (क) मौलिक साक्षरता एवं अंक ज्ञान, (ख) विवेचनात्मक जीवन कुशलता (आर्थिक साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक कुशलता, स्वास्थ्य देखभाल एवं जागरूकता, शिशु देखभाल एवं शिक्षा

तथा परिवार कल्याण), (ग) व्यावसायिक विकास कुशलता (ताकि स्थानीय स्तर पर रोजगार प्राप्त किया जा सके), (घ) मौलिक साक्षरता (प्रारंभिक, मध्य तथा माध्यमिक स्तर की समतुल्यता सहित) तथा (च) सतत् शिक्षा (जिसमें कला, विज्ञान, तकनीकि, संस्कृति, खेल एवं मनोरजंन आधारित प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम सहित स्थानीय शिक्षार्थी के अन्य पसंदीदा एवं उपयोगी विषय जैसे विवेचनात्मक जीवन कुशलता पर विशद सामग्री सम्मलित होंगी। इस संरचना को विकसित करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जायेगा कि प्रौढ़ शिक्षार्थी के लिए व्यवहार में लाए जाने वाले पठन–पाठन पद्धति एवं सामग्री बच्चों के उपयोग में लाए जाने वाले तकनीक एवं सामग्री से भिन्न हों।

द्वितीय, प्रतिबद्धता प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा तक सभी आग्रही प्रौढ़ों की पहुच सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक संरचना का निर्माण करने की है। इस दिशा में उठाया जाने वाला एक प्रमुख कदम विद्यालय परिसर तथा सामुदायिक पुस्तकालयों हेतु आबंटित स्थानों का खाली समय अथवा छुट्टियों के दिन प्रौढ़ शिक्षा पाठ्यक्रम हेतु उपयोग किया जाना है जो आईसीटी युक्त होंगे तथा इनका उपयोग सामाजिक सहभाग बढ़ाने तथा जन मानस को पुष्ट करने वाले कार्यक्रमों के संचालन हेतु किया जायेगा। आधारभूत संरचानाओं का विद्यालयीन, उच्च, प्रौढ़ और व्यावसायिक शिक्षा अथवा अन्य सामुदायिक तथा स्वयंसेवी कार्यक्रमों के लिए साझा किया जाना इन पांचों प्रकार की शिक्षाओं के बीच भौतिक तथा मानवीय संसाधनों के विवेचनात्मक उपयोग कि दिशा में अपेक्षित तारतम्य विकसित करेगा। इन्हीं कारणों से प्रौढ़ शिक्षा केंन्द्रों को उच्च शैक्षिक संस्थानों, व्यावयायिक प्रशिक्षण केन्द्रों इत्यादि की भांति जन संस्थानों में सम्मिलित किए जाने की उम्मीद जताई गई है।

तृतीय, प्रतिबद्धता के अनुसार प्रेरक एवं प्रशिक्षक प्रौढ़ शिक्षा पाठ्यक्रम संरचना में वर्णित प्रौढ़ शिक्षा के पांचों प्रकारों को प्रौढ़ शिक्षार्थियों तक पहुंचाने का कार्य करेगें। इन प्रेरकों एवं प्रशिक्षकों को राष्ट्रीय, राज्य तथा जिला स्तरीय संसाधन उपलब्ध कराने वाले संस्थाओं के माध्यम से प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को संचालित करने अथवा वहां आयोजित किए जाने वाले विविध कार्यक्रमों के सुचारू संचालन तथा स्वयंसेवी प्रशिक्षकों के साथ समन्वय बनाये रखने हेतु प्रशिक्षित किया जायेगा। समाज के शिक्षित लोगों जिनमें उच्च शैक्षिक संस्थानों से आए वे लोग भी सम्मलित होंगे जो ततसंबंधी संस्थानों के जनकल्याण प्रतिबद्धताओं के अनुरूप स्थानीय समुदायों तथा राष्ट्र के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हुए अपने उत्तरदायित्वों का पालन कर प्रौढ़ शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित करेंगे, संक्षिप्त प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करेंगे तथा प्रौढ़ शिक्षा प्रशिक्षक के रूप में समाज को अपनी स्वैच्छिक सेवाएं प्रदान करने की कोशिश करेंगे। साक्षरता तथा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के बेहतर क्रियान्वयन हेतु राज्य सरकारें, गैर सरकारी संस्थाओं तथा अन्य सामुदायिक संस्थानों के साथ मिलकर काम करेंगी।

चौथा, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन हेतु समुदाय के सभी सदस्यों की प्रतिभागिता सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा। उन सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा परामर्शदाताओं को, जो अपनी समुदायों के बीच जा कर नामांकन न कर पाने वाले तथा बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने वाले बच्चों अथवा बुजुर्गों को चिन्हित कर उन्हें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेंगे, को इस हेतु भी प्रोत्साहित किया जाएगा कि वे अभिभावकों, किशोरों तथा प्रौढ़ों को प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के प्रशिक्षक अथवा प्रशिक्षार्थी किसी भी रूप में लाभ उठाने का प्रयत्न करें। इसके उपरांत इन सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा परामर्शदाताओं को स्थानीय प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से जोड़ा जाएगा। साथ ही साथ प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न संभावनाओं को विज्ञापनों अथवा घोषणाओं अथवा विविध स्वयंसेवी संस्थाओं एवं स्थानीय संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के माध्यक से प्रचारित किया जाएगा।

पांचवी प्रतिबद्धता हमारे सामुदायों एवं शैक्षणिक संस्थानों में पढ़ने की आदत विकसित हो सकें इसके लिए पुस्तकों की उपल्बधता एवं उन तक पहुंच को बेहतर बनाए जाने की आवश्यकता को रेखांकित करती है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति सिफारिश करती है कि सभी समुदायों एवं शैक्षणिक संस्थानों यथा विद्यालय, कॉलेज, विश्वविद्यालय तथा पब्लिक पुस्तकालयों को सक्षम बनाया जायेगा तथा उन्हें आधुनिकृत किया जायेगा ताकि विकलांग सहित अन्य सभी छात्रों, के आवश्यकताओं तथा अभिरूचियों के अनुरूप उन्हें पर्याप्त संख्या में पुस्तकें उपल्बध कराया जा सके। केन्द्र सरकार तथा सभी राज्य सरकारें यह सुनिश्चित करेंगी कि देश भर के सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े इलाकों तथा ग्रामीण एवं दूर–दराज के क्षेत्रों में रह रहे सभी छात्रों को उचित मूल्य पर पुस्तकें उपल्बध कराई जा सकें। सभी सरकारी अथवा गैर–सरकारी संस्थाएं इस प्रकार कि रणनीति अपनाएंगी जिससे भारत में स्वीकृत सभी भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों की गुणवत्ता को और बेहतर तथा आकर्षक बनाया जा सके। डिजिटल पुस्तकालयों का दायरा बढ़ाने तथा मौजूदा पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तकों की ऑनलाइन पहुंच बढ़ाने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएगें। समुदायों तथा शैक्षणिक संस्थानों में जीवन्त तथा सक्रिय पुस्तकालयों की उपल्बधता के लिए पर्याप्त संख्या में पुस्तकालय कर्मचारियों की नियुक्ति तथा व्यावसायिक क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति सुनिश्चित करने के लिए योजना बनाई जाएगी। इस सम्बंध में उठाए जाने वाले अन्य महत्वपूर्ण कदमों में निम्नलिखित को प्रमुखता से शामिल किया जाएगा यथा वर्तमान पुस्तकालयों को और अधिक सम्पन्न बनाये जाने, ग्रामीण क्षेत्रों में नवीन पुस्तकालय बनाने, अविकसित अथवा अल्प विकसित क्षेत्रों में रीडिंग रूम बनाये जाने, भारतीय भाषाओं में अधिक से अधिक पठन–पाठन सामग्री उपल्बध कराये जाने, बाल पुस्तकालय एवं चल पुस्तकालय खोलने, सभी विषयों में तथा देश के सभी क्षेत्रों में सामजिक पुस्तक कल्ब आदि गठन करने तथा शैक्षणिक संस्थानों एवं पुस्तकालयों के बीच बेहतर समन्वय एवं सहयोग स्थापित करने कि कोशिश की जाएगी।

अन्ततः, तकनीक को इस स्तर तक मजबूत किया जाएगा जिससे कि उपरोक्त कदमों

को भलिभांति उठाया जा सके। उच्च स्तरीय तकनीक यथा प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग किये जाने वाले मोबाइल एप, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, सैटेलाईट आधारित टी.वी. चैनलों, ऑनलाइन पुस्तकें एवं सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी युक्त पुस्तकालयों तथा प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को सरकारी अथवा जन सहयोग एवं विविध प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्राप्त आर्थिक सहयोग द्वारा विकसित किया जएगा। कई मामलों में गुणवत्तापूर्ण प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन एवं पारम्पारिक माध्यमों के सहयोग से संचालित करने की कोशिश की जाएगी।

vgdkj dk R;kx

मैं जानता हूं कि मुझे अभी बड़ा मुश्किल रास्ता तय करना है। मुझे अपनी हस्ती को बिलकुल मिटा देना होगा। जब तक मनुष्य अपने आपको स्वेच्छा से अपने सहचरों में से सबसे अन्तिम स्थान पर खड़ा न कर दे तब तक उसकी मुक्ति संभव नहीं। अहिंसा विनम्रता की चरम सीमा है।

यदि हम धर्म, राजनीति, अर्थशास्त्र आदि से 'मैं' और 'मेरा' निकाल सकें तो हम शीघ्र ही स्वतंत्र हो जाएंगे, और पृथ्वी पर स्वर्ग उतार सकेंगे।

समुद्र की एक बूद भी समुद्र की विशालता का एक हिस्सा होती है, यद्यपि उसे इसका भान नहीं होता। लेकिन समुद्र से छिटककर गिरते ही वह सूख जाती है। हम कोई अतिशयोक्ति नहीं करते जब यह कहते हैं कि जीवन मात्र एक बुलबुला है।

सत्यशोधक के लिए अहंकारी होना सम्भव नहीं है। जो दूसरों के लिए अपने जीवन का बलिदान करने को तत्पर हो, उसके पास इस संसार में अपने लिए स्थान सुरक्षित करने का समय कहां ?

व्यक्ति की क्षमता की सीमाएं हैं, और जैसे वह यह समझने लगता है कि वह सब कुछ करने में समर्थ है, ईश्वर उसके गर्व को चूर कर देता है। जहां तक मेरा प्रश्न है, मुझे स्वभाव में इतनी विनम्रता मिली है कि मैं बच्चों और अनुभवहीनों से भी मदद लेने को तैयार रहता हूं।

मेरे कृत्यों का निर्णय मेरा भाग्य करता है। मैं कभी उन्हें खोजने नहीं जाता। वे अपने आप मेरे पास आ जाते हैं। मेरे सम्पूर्ण जीवन का –दक्षिण अफ्रीका में और भारत लौटकर आने के बाद से अब तक यहीं क्रम रहा है।

–महात्मा गांधी

fo|ky;h okrkoj.k dk fo|kfFkZ;ksa dh 'kSf{kd fpark ij izHkko

vfHk"ksd JhokLro
vkj- ,u- yky JhokLro

यह शोध पत्र एक सर्वेक्षण शोध पर आधारित है। इस शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के क्रमशः 10–10 हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के कक्षा 11 में अध्ययनरत कुल 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें 400 छात्र एवं 400 छात्राएँ थी। शोध का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं पर शैक्षिक चिंता के प्रभाव एवं शैक्षिक चिंता का लैंगिक भिन्नता पर प्रभाव ज्ञात करना था। शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण, शहरी, ग्रामीण–शहरी क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्रों की शैक्षिक चिंता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। जबकि छात्राओं की शैक्षिक चिंता पर इसका सार्थक प्रभाव पड़ता है। हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

प्रत्येक बच्चा अपनी अभिरूचि, अभिवृति, क्षमता, व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक रूप से एक–दूसरे से भिन्नता रखता है, ठीक उसी प्रकार विद्यालयी वातावरण भी अपने क्रियाकलापों, अनुशासन, पठन–पाठन, भौतिक संसाधनों आदि में परस्पर एक–दूसरे से भिन्न होता है। विद्यालय का यह वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता, उपलब्धि, अभिप्रेरणा आदि को प्रभावित करता है, जिसका सीधा संबंध विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से होता है। यह स्पष्ट है कि जहाँ प्रशिक्षित, क्रियाशील एवं प्रेरणादायक शिक्षक होंगे एवं विद्यालय भी समस्त भौतिक संसाधनों से परिपूर्ण होगा, वहाँ के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता सामान्यतया कम होगी। विद्यार्थी अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रेरित होते रहेंगे। यह सत्य है कि अच्छे विद्यालय के वातावरण में ही बालकों का उचित दिशा में विकास किया जा सकता है। यदि विद्यालय का वातावरण उत्तम होगा तो विद्यार्थियों को शैक्षिक कार्य के लिए उचित अभिप्रेरणा प्रदान करेगा तथा शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि सुनिश्चित करेगा। एक उत्तम विद्यालय उसमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों को एक ऐसा विशिष्ट वातावरण प्रदान करता है, जिसका प्रभाव निश्चित रूप से उनके स्वास्थ्य एवं शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ता है। शिक्षा आयोग (1964–66) ने अपने प्राक्कथन में लिखा है– ''भारत के भाग्य का निर्माण उसके कक्षा–कक्ष में हो रहा है।''

हम कह सकते हैं कि राष्ट्र के निर्माण में विद्यालयों का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले नागरिकों का निर्माण इन्हीं विद्यालयों में होता है, जहाँ गुणवत्तापूर्ण नागरिकों की पौध तैयार की जाती है। किसी विद्यालय की गुणवत्ता वहाँ

के शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण पर निर्भर करती है, क्योंकि इसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों के विकास पर पड़ता है, जिसका पोषण निश्चित रूप से विद्यालयों में ही हो सकता है। विद्यार्थी के सर्वागीण विकास को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक शैक्षिक चिंता है, जो विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को निश्चित रूप से प्रभावित करता है। शैक्षिक चिंता विद्यार्थी की उपलब्धि एवं शैक्षिक प्रगति पर प्रभाव डालती है। इस कारण इसकी भूमिका विद्यार्थियों के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शैक्षिक चिंता के प्रतिक्रिया के स्वरूप विद्यार्थियों में उद्दंडता, अत्यधिक क्रोधित व्यवहार, दिवास्वप्न, मनो–शारीरिक थकावट, असामान्य व्यवहार आदि परिलक्षित होते हैं।

विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता का मुख्य कारण परिवार एवं शिक्षकों की बालक से उच्च आकांक्षाएँ रखना भी होता है। जब विद्यार्थी से उच्च स्तर की शैक्षणिक उपलब्धि या अन्य क्षेत्रों में सफलता की उम्मीद रखी जाती है और यदि विद्यार्थी उनके अनुरूप उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाता तो वह चिंता से ग्रस्त हो जाता है। इस स्थिति में यदि शिक्षक एवं अभिभावक ऐसे विद्यार्थी के साथ कठोरता का व्यवहार करते हैं तो कभी–कभी वस्तु–स्थिति और अधिक बिगड़ने की संभावना रहती है, जो विद्यार्थी को असफलता की ओर ले जाती है एवं अनावश्यक मानसिक दबाव से विद्यार्थी का विद्यालय के वातावरण से समायोजन बिगड़ने की संभावना भी बनी रहती है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी विद्यालय में अनुपस्थित रहने लगता है, गृह कार्य में कमी आने लगती है और उसकी उपलब्धि का स्तर लगातार कम होने लगता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का विवरण निम्न प्रकार है–

- fo|ky;h okrkoj.k – विद्यालय का वातावरण विद्यार्थी की शैक्षणिक चिंता को प्रभावित करता है। यदि विद्यालय में शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, विद्यार्थी–विद्यार्थी संबंध अच्छे होते हैं, उचित शिक्षण विधियों के द्वारा शिक्षण कार्य किया जाता है एवं विद्यार्थियों को आवश्यक सुविधाएँ जैसे – प्रयोगशाला, पुस्तकालय, स्वच्छ एवं आनंददायक कक्षा, योग्य शिक्षक आदि उपलब्ध कराए जाते हैं तो निस्संदेह उसमें शिक्षण कार्य के प्रति रूचि बढ़ती है, जो उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के रूप में दिखाई देती है। वहीं, जहाँ विद्यालय वातावरण की परिस्थितियाँ विद्यार्थियों के शिक्षण के अनुकूल नहीं रहती हैं तो उनमें शैक्षणिक चिंता होने की संभावना अधिक रहती है।
- d{kk&d{k dk okrkoj.k – कक्षा का वातावरण विद्यार्थियों के आपसी संबंध, शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, शिक्षण विधि एवं आत्म–अनुशासन पर निर्भर करता है। इसके अभाव में विद्यार्थियों के बीच विद्रोही प्रकृति, ईर्ष्यालु भाव एवं एक–दूसरे के प्रति नकारात्मक सोच को जन्म मिलता है। इस कारण विद्यार्थियों के शिक्षण कार्य में बाधा उत्पन्न होती है, जो उनकी उपलब्धि को प्रभावित करती है और वे चिंता ग्रस्त हो जाते हैं।

- n.M dk Hk; – शैक्षिक चिंता को बढ़ाने में दण्ड की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। दण्ड चाहे शारीरिक रूप से हो या आर्थिक रूप से, वह विद्यार्थी के मानसिक संतुलन को प्रभावित करता है। जिससे उसका शैक्षणिक कार्य भी प्रभावित होता है और विद्यार्थी में अन्य विद्यार्थियों के समक्ष हीनता की भावना उत्पन्न हो जाती है, जो उसकी शैक्षिक चिंता को बढ़ा देती है।
- lg;kfx;k dh mnklhurk – कक्षा में विभिन्न मानसिक एवं शारीरिक योग्यता वाले विद्यार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं। कुछ विद्यार्थी सामान्य एवं कुछ निम्न बौद्धिक स्तर वाले या कमजोर विद्यार्थी अपने से अधिक योग्यता वाले साथियों से शिक्षण कार्यों में सहयोग माँगते हैं और वह सहयोग उन्हें प्राप्त होता है तो उनकी शिक्षण में रूचि बनी रहती है। पंरतु जब उन्हें अपने सहयोगियों से उपेक्षा मिलती है तो वे उदासीन हो जाते जाते हैं। फलस्वरूप वे शैक्षणिक रूप से चिंतित हो जाते है।
- 'kf{kd miyfC/k@ijh{kk ifj.kke – परीक्षा देने के पश्चात् विद्यार्थियों में परीक्षा परिणाम के प्रति विशेष भय एवं उत्सुकता रहती है। योग्यता के स्तर के अनुरूप शैक्षणिक उपलब्धि होने पर शैक्षणिक चिंता कम रहती है, पंरतु यदि परिणाम अपेक्षित स्तर से कम प्राप्त होता है तो विद्यार्थी में शैक्षणिक चिंता परिलक्षित होती है।
- mPp egRodk{kk Lrj – प्रत्येक विद्यार्थी अपनी योग्यता के अनुसार अपनी आकांक्षा का निर्माण करता है एवं उसे पूरा करने हेतु प्रयास करता है। पंरतु जब विद्यार्थी में उसकी महत्वाकांक्षा का स्तर अत्यधिक उच्च होता है और वह अपने प्रयासों से उसकी पूर्ति नही कर पाता है तो कभी–कभी वह शैक्षिणिक चिंता का शिकार हो जाता है।
- vfu;ferrk – जब विद्यार्थी विद्यालय में अनियमित रहता है तो उसे कक्षा में पढ़ाई गई विषय–वस्तु की जानकारी नहीं रहती है। विद्यालय में उपस्थिति कम होने के कारण उसका शैक्षिक कार्य प्रभावित हो जाता है, जिससे उसमें शैक्षिक चिंता उत्पन्न हो जाती है। कभी–कभी आज का कार्य कल पर डालने और समय से कार्य पूरा न करने के कारण भी चिंता बढ़ जाती है।
- loxkRed vfLFkjrk – कुछ विद्यार्थी अत्यधिक संवेदनशील होते हैं तथा वे भावनात्मक रूप से कमजोर रहते हैं। जिन विद्यार्थियों में संवेगात्मक स्थिरता नहीं होती, वे विशिष्ट परिस्थितियों में स्वयं को नियंत्रित नहीं कर पाते हैं। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की ज़रा सी बात उन्हें विचलित कर देती है और वे प्रतिकूल व्यवहार के कारण अपनी क्षमता से कम शैक्षणिक कार्य करते है। इस कारण उनकी उपलब्धि प्रभावित होती है, परिणामस्वरूप उनमें शैक्षणिक चिंता बढ़ जाती है।
- ifjokj – अधिकतर अभिभावक अपने बच्चे से हर क्षेत्र में अधिक उपलब्धि एवं सफलता की आशा रखते हैं। परंतु जब उनका बच्चा उनकी सोच व आकांक्षा के अनुरूप उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाता है तो उसे कभी–कभी अपने परिवार के

सदस्यों की अवहेलना का शिकार भी होना पड़ता है, जो उसकी शैक्षणिक चिंता को बढ़ा देता है। विद्यार्थी के पारिवारिक सदस्यों से संबंध एवं उनका सामाजिक–आर्थिक स्तर भी उसके शैक्षणिक स्तर को प्रभावित करता है। जिन विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती है, उन्हें पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में शिक्षण कार्य करना होता है। इससे उनका शैक्षणिक स्तर प्रभावित होता है, जो उनमें चिंता को जन्म देता है।

- ghu Hkkouk – कुछ परिवारों में कभी–कभी अभिभावक अपने बच्चे की तुलना किसी अन्य बच्चे से करते हैं जिससे बच्चे में कुण्ठा, ईर्ष्या और हीनता की भावना भर जाती है और वह स्वयं को उपेक्षित महसूस करने लगता है। कभी–कभी कुछ शिक्षकों के द्वारा कोई विशेष विद्यार्थी स्वीकृत किए जाते हैं व उन्हें प्रोत्साहन दिया जाता है, जिससे उन विद्यार्थियों में आत्मगौरव व आत्मविश्वास की भावना का विकास होता है। पंरतु इसके विपरीत अस्वीकृत बालकों में हीनता की भावना घर कर लेती है जिसके कारण वे शिक्षण कार्यों में रूचि प्रदर्शित नहीं करते तथा असफलता के भय से उनमें शैक्षणिक चिंता उत्पन्न हो जाती है।
- HkkX;oknh – जब विद्यार्थी अपने पहले प्रयास में सफल नहीं हो पाता तो वह असफलता से विचलित हो जाता है। कुछ विद्यार्थी अपनी असफलता को चुनौती के रूप में स्वीकार कर लेते हैं एवं अपने प्रयास से उस कार्य में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। पंरतु कुछ विद्यार्थी असफलता मिलने पर कार्य को भाग्य या किस्मत के भरोसे छोड़ देते हैं और प्रयास न करके उदासीन तथा कर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं। फलस्वरूप वे चिंताग्रस्त हो जाते हैं।
- LokLF; & " स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।" यह उक्ति विद्यार्थी जीवन पर पूर्णतः लागू होती है। जब विद्यार्थी अस्वस्थ रहता है तो उसकी पढ़ाई में रूचि कम हो जाती है और उसका किसी कार्य में मन नहीं लगता है। वह अपने शिक्षण कार्य में मन नहीं लगता है और अपने शिक्षण कार्य में पिछड़ जाता है। उसका उपलब्धि स्तर निरंतर प्रभावित होता है। फलस्वरूप उसमें शैक्षणिक चिंता दृष्टिगोचर होती है। "स्वस्थ तन तो स्वस्थ मन" एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से "स्वस्थ मन तो स्वस्थ तन" दोनों उक्तियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि जहाँ पहली उक्ति शारीरिक स्वास्थ्य से संबंधित है, वहीं दूसरी मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित है। अपर्याप्त मानसिक स्वास्थ्य चिंता को जन्म देता है। इसलिए शारीरिक स्वास्थ्य का अच्छा होना ज़रूरी है।
- vkRefo'okl esa deh – विद्यार्थी कार्य करते समय यदि थोड़ा सा असफल होता है तो कभी–कभी उसके आत्मविश्वास में कमी आने लगती है, इससे उसमें शैक्षिणिक कार्य के प्रति चिंता घर करने लगती है।
- vlqj{kk dh Hkkouk – कभी–कभी विद्यार्थी भविष्य में घटने वाली घटनाओं का नकारात्मक चिंतन करता है, जिसके फलस्वरूप वह दुःखी, विचलित एवं उदासीन हो

जाता है। उसमें असुरक्षा की भावना घर कर जाती है और वह अपनी सफलता के प्रति शंकित हो जाता है तथा उसकी शैक्षिक चिंता बढ़ जाती है।

- द< fu'p; dk vHkko – जब किसी विद्यार्थी को शिक्षक कोई कार्य सौंपता है तो वह उस कार्य को पूर्ण करना चाहता है, पंरतु यदि उसमें दृढ़ निश्चय या कृत संकल्प की कमी होती है, तो वह उस कार्य को करने में समस्या महसूस करता है। फलस्वरूप वह कार्य निष्पादन सही ढ़ग से नहीं कर पाता है और उसमें शैक्षिक चिंता देखी जा सकती है।
- fuEu ckf)d ;kX;rk – जिन विद्यार्थियों में बौद्धिक एवं मानसिक योग्यता का स्तर उच्च होता है, उनमें चिंतन, स्मृति, तार्किक योग्यता, समस्या समाधान योग्यता आदि की क्षमता अधिक होती है जिस कारण वे परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त कर लेते हैं इसके विपरीत जिन विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता अपेक्षाकृत कम होती है, उनके प्राप्तांक निम्न स्तर के होते हैं। फलस्वरूप उनमें शैक्षिक चिंता पाई जाती है।

इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता पर कुछ शोध अध्ययनों का विवरण दिया गया है, जैसे – राणा, रिजवान अकरम और नासिर महमूद (2010) ने स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता एवं उपलब्धि में संबंध ज्ञात करने का प्रयास किया। निष्कर्षस्वरूप शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक चिंता में नकारात्मक सह–संबंध पाया गया तथा परिणाम यह बताते हैं कि चिंता परीक्षण में वर्णात्मक चिंता से संज्ञानात्मक चिंता का प्रभाव अधिक पाया गया। सारांश रूप में यह पाया गया कि शैक्षिक चिंता विद्यार्थियों की कम उपलब्धि एवं खराब प्रदर्शन का एक प्रमुख कारण है। पंरतु उचित प्रशिक्षण द्वारा इसके प्रभाव को नियंत्रित किया जा सकता है। परवथम्मा और शरनम्मा (2010) ने चिंता, आत्मविश्वास स्तर एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन किया। परिणामस्वरूप हाईस्कूल के अधिकतर विद्यार्थियों (64.7 प्रतिशत) में उच्च स्तर की शैक्षिक चिंता पाई गई। नीलत और अत्री (2013) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता एवं उनकी उपलब्धियों का अध्ययन किया। शोध से यह निष्कर्ष पाया गया कि छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक चिंता एवं उपलब्धि में सार्थक अंतर होता है।

अलेसी, मारियाना; राप्पो, गाएतानो; पेपी, अन्नामारिना (2014) ने विद्यार्थियों की अधिगम अयोग्यता, आत्सम्मान के प्रति अवसाद एवं चिंता का अध्ययन किया। परिणामस्वरूप यह पाया गया कि अधिकतर बच्चे अवसाद से ग्रासित थे, जिसका मुख्य कारण रूचि एवं उत्साह की कमी थी, जिससे उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अधिगम अयोग्यता के कारण वह शैक्षिक चिंता से ग्रसित थे। कुमारन, सेन्थिल और सुब्रमण्यम, कदिरावन (2015) ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं परीक्षा चिंता के संबंध में अध्ययन किया। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता एवं उनके व्यक्तित्व के मध्य सार्थक अंतर होता है। उनकी चिंता के स्तर पर विद्यार्थियों के जेंडर का प्रभाव पड़ता है।

शर्मा, योगेश (2016) ने प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के गणित विषय संबंधी शैक्षिक चिंता पर अध्ययन किया। अध्ययन से निष्कर्ष ज्ञात हुआ कि शैक्षिक चिंता पर प्रसंग आधारित अधिगम का उच्च एवं मध्यम सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। टालबॉट, लौरेन (2016) ने प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता के फैलाव, प्रभाव एवं हस्तक्षेप का अध्ययन किया। परिणामस्वरूप यह ज्ञात हुआ कि परीक्षा चिंता के भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक होते हैं, जो विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

उपरोक्त विवेचन एवं शोधों के आधार पर हम कह सकते हैं कि शैक्षिक चिंता विद्यार्थी की उपलब्धि एवं शैक्षिक प्रगति पर प्रभाव डालती है। इस कारण इसकी भूमिका विद्यार्थियों के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है । विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों ने विद्यार्थियों में सामान्य स्तर की शैक्षिक चिंता का होना आवश्यक माना है, क्योंकि शैक्षिक चिंता का सकारात्मक पहलू होने के कारण कुछ मात्रा या सामान्य स्तर की शैक्षिक चिंता विद्यार्थियों को उनके लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रेरित करती है। इसके विपरीत शैक्षिक चिंता का नकारात्मक पक्ष भी होता है, जिससे पीड़ित होकर विद्यार्थी अपनी उपलब्धि को आशानुकूल प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इस परिस्थिति में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षक ऐसे विद्यार्थियों को शैक्षणिक मार्गदर्शन देकर उनमें सुधार की संभावनाओं को बढ़ा सकता है जिससे विद्यार्थी सही ढ़ग से समायोजन स्थापित कर सकते हैं, क्योंकि शैक्षणिक मार्गदर्शन विद्यार्थियों के लिए अच्छा प्रेरणा स्रोत होता है। अतएव यह कह सकते हैं कि प्रभावशाली शिक्षक वह है, जो यह जानता है कि चिंता को कक्षा में कैसे उत्पन्न किया जाए। किस प्रकार अधिक चिंता का मुकाबला किया जाए और विद्यार्थियों में चिंता का स्तर कितना रखा जाए। क्योंकि विद्यार्थियों में एक सामान्य एवं मध्यम स्तर की चिंता होना आवश्यक है, जो उन्हें आगे बढ़ने एवं उपलब्धि प्राप्त करने में प्रेरणा के रूप में सहायक होती है।

mís';

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य थे –

- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्रों की शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्राओं की शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

ifjdYiuk,

इस शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ थीं –

- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्रों की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
- हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
- अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं होगा।

'kks/k lhek

इस शोध अध्ययन की सीमा निम्नलिखित थी –

- यह शोध केवल उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले तक ही सीमित था। शोध अध्ययन हेतु हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के 10 शहरी एवं 10 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों का चयन किया गया था।
- शोध अध्ययन 11वीं कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों पर ही किया गया था।
- शोध अध्ययन के लिए सह–शिक्षा वाले विद्यालयों का ही चयन किया गया था, जिसका कारण यह था कि बालक एवं बालिकाओं का विद्यालयी वातावरण समान हो।
- शोध अध्ययन के लिए केवल उन्हीं विद्यार्थियों का चयन किया गया था, जो उसी विद्यालय में कम–से–कम तीन वर्षों से अध्ययनरत थे।

'kks/k fof/k

शोधक ने आवश्यक सूचनाएँ एवं जानकारी प्राप्त करने हेतु वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया था। शोधक ने इस विधि के माध्यम से उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जनपद के विशेष संदर्भ में विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया।

U;kn'kZ

न्यादर्श हेतु यादृच्छिक, स्तरित एवं सोद्देश्य न्यादर्श विधियों का चयन किया गया था। न्यादर्श चयन का विस्तृत विवेचन निम्न है –

1-fo|ky;k dk p;u

सर्वेक्षण हेतु विद्यालय का चयन स्तरित विधि से किया गया। विद्यालयों को चयनित करने के लिए शोधक ने सर्वप्रथम शिक्षा अधिकारी कार्यालय जाकर हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के

इण्टरमीडिएट विद्यालयों की सूची प्राप्त की तथा उनमें से उन्हीं विद्यालयों का चयन किया गया जिनमें छात्र एवं छात्राएँ, दोनों अध्ययन करते हो। तदुपरान्त तहसील, ब्लॉक एवं शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर विद्यालयों का वर्गीकरण किया गया तथा विद्यालयों के वर्गीकरण के पश्चात् यादृच्छिक विधि द्वारा हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के 10–10 विद्यालयों का चयन किया गया, जिनमें से पाँच–पाँच शहरी एवं पाँच–पाँच ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय लिए गए थे।

2-fo|kfFk;k dk p;u

विद्यार्थियों का चयन सोद्देश्य विधि से किया गया। न्यादर्श के चयन में कक्षा 11 के उन्हीं विद्यार्थियों को स्थान दिया गया जो उसी विद्यालय में कम–से–कम तीन वर्षों से अध्ययनरत थे। इसका कारण यह था कि चयनित विद्यार्थियों पर उस विद्यालय के विद्यालयी वातावरण का पूरा–पूरा प्रभाव देखा जा सके। शोधक जेंडर भेद पर अध्ययन करना चाहता था, इसी कारण कक्षा 11वी के उन्हीं वर्गों का चयन किया गया, जहाँ छात्र–छात्राएँ एक साथ पढ़ते हों। तदुपरांत चयनित कक्षा एवं वर्ग की विद्यार्थी उपस्थिति पंजिका लेकर क्रमानुसार छात्र एवं छात्राओं के नाम को अलग कर एक सूची तैयार की गई एवं सूची में से आरोही क्रम में क्रमशः प्रत्येक पाँचवे छात्र एवं छात्रा का चयन किया गया। न्यादर्श के लिए कुल 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 400 विद्यार्थी हिंदी एवं 400 अंग्रेजी माध्यम के लिए गए। प्रत्येक 400 विद्यार्थियों में आधे शहरी एवं आधे ग्रामीण क्षेत्र के थे। इस प्रकार शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के कुल 400–400 विद्यार्थियों का चयन किया गया। न्यादर्श के चयन के प्रत्येक चरण में ये ध्यान रखा गया कि छात्र एवं छात्राओं का अनुपात समान हो।

3-midj.k dk p;u

इस शोध अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु सिंह और सेन गुप्ता (2013) द्वारा निर्मित शैक्षणिक चिंता मापनी का उपयोग किया गया। मापनी की विश्वसनीयता परीक्षण–पुनर्परीक्षण विधि से 0.60 एवं अर्द्ध विच्छेदन विधि से 0.65 प्राप्त की गई। सिन्हा (1973) के चिंता मापनी के साथ सह–संबंध के आधार पर मापनी की वैधता गई। मापनी का वैधता गुणांक 0.41 आया।

iznÙkk dk fo'ys"k.k

शोधक द्वारा प्राप्तांकों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं प्रसरण विश्लेषण द्वारा किया गया, जिसे तालिका 2, 3 व 4 में दिया गया है।

शैक्षिक चिंता संबंधित परिणाम तालिका 2 से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्र और शहरी–ग्रामीण क्षेत्र के अंग्रेजी एवं हिंदी माध्यम के विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का छात्रों की शैक्षिक चिंता में पर्याप्त सार्थक अंतर प्राप्त नहीं है। इसी प्रकार ग्रामीण एवं शहरी

क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की शैक्षिक चिंता पर वातावरण का प्रभाव जानने के लिए 'एफ' अनुपात ज्ञात किया गया। परिणामस्वरूप (तालिका 3 से) यह ज्ञात हुआ कि छात्रों की शैक्षिक चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्र और शहरी–ग्रामीण क्षेत्र के अंग्रेजी एवं हिंदी माध्यम के विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के छात्रों की शैक्षिक चिंता समान पाई गई।

Rkfydk 1 & U;kn'k dk {k=] ek/;e ,o tsMj ds vk/kkj ij forj.k

Ø-	fo|kFkh	{k=	fo|ky;	Lk[;k	e/;eku	Ekkud fopyu	e/; =fV	Økfrd vuqikr	lkFkdrk* Lrj
			हिंदी माध्यम	100	12.69	5.18	0.52		
1.	छात्र	ग्रामीण	अंग्रेजी माध्यम	100	13.11	4.40	0.44	0.62	सार्थक नहीं
			हिंदी माध्यम	100	11.79	3.59	0.36		
2.	छात्र	शहरी	अंग्रेजी माध्यम	100	11.72	4.22	0.42	0.13	सार्थक नहीं
			हिंदी माध्यम	200	12.24	4.47	0.32		
3.	छात्र	शहरी–ग्रामीण	अंग्रेजी माध्यम	200	12.42	4.36	0.31	0.40	सार्थक नहीं
			हिंदी माध्यम	100	18.32	7.04	0.70		
4.	छात्राएँ	ग्रामीण	अंग्रेजी माध्यम	100	14.10	3.83	0.38	5.27	सार्थक है
			हिंदी माध्यम	100	17.44	6.91	0.69		
5.	छात्राएँ	शहरी	अंग्रेजी माध्यम	100	10.90	12.00	3.14	6.29	सार्थक है
			हिंदी माध्यम	200	17.88	6.97	0.49		
6.	छात्राएँ	शहरी–ग्रामीण	अंग्रेजी माध्यम	200	13.38	3.57	0.25	8.12	सार्थक है

इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र प्रायः विद्यालयों के अलावा कोंचिग संस्थानों में भी अध्ययन करते होंगे। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावक अपने पाल्यों हेतु शिक्षा की यह समानांतर व्यवस्था प्रदान करने की व्यवस्था समान रूप से करने का प्रयास करते होंगे। दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों में प्रतियोगी परीक्षाओं एवं मुख्य परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त करने के लिए समान रूप से अवसर प्रदान किया जाता होगा, जिसके कारण ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयी वातावरण का छात्रों की शैक्षिक चिंता पर प्रभाव समान रूप से पड़ता होगा।

छात्राओं की शैक्षिक चिंता संबंधित परिणामों (तालिका 2) के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण, शहरी एवं शहरी–ग्रामीण क्षेत्र के अंग्रेजी एवं हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का वहाँ के विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं की शैक्षणिक चिंता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण की अपेक्षा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण की छात्राओं की शैक्षणिक चिंता सांख्यिकीय दृष्टिकोण से कम पाई गई।

तलिका 2 – हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र/छात्राओं के शैक्षिक चिंता संबंधित परिणाम

क्र	विद्यार्थी	विचरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंक	वर्गों का योग	औसत वर्ग	एफ अनुपात	सार्थकता* स्तर
1.	छात्र	समूहों के मध्य	3	140.17	46.72	2.43	सार्थक नहीं
		समूहों के साथ	396	7611.93	19.22		
2.	छात्राएँ	समूहों के मध्य	3	2167.40	772.47	23.71	सार्थक है
		समूहों के साथ	396	12067.84	30.47		
3.	छात्र–छात्राएँ	समूहों के मध्य	7	4488.87	641.27	25.81	सार्थक है
		समूहों के साथ	792	19676.77	24.85		

*** 0.05 सार्थकता स्तर पर**

तलिका 3 – हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र/छात्राओं के शैक्षिक चिंता संबंधित परिणाम का एफ अनुपात

क्र	विद्यार्थी	विचरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंक	वर्गों का योग	औसत वर्ग	एफ अनुपात	सार्थकता* स्तर
1.	छात्र	समूहों के मध्य	3	140.17	46.72	2.43	सार्थक नहीं
		समूहों के साथ	396	7611.93	19.22		
2.	छात्राएँ	समूहों के मध्य	3	2167.40	772.47	23.71	सार्थक है
		समूहों के साथ	396	12067.84	30.47		
3.	छात्र–छात्राएँ	समूहों के मध्य	7	4488.87	641.27	25.81	सार्थक है
		समूहों के साथ	792	19676.77	24.85		

*** 0.05 सार्थकता स्तर पर**

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण का वहाँ अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षणिक चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर ज्ञात करने हेतु 'एफ अनुपात' की गणना की गई (तालिका 3), इससे यह ज्ञात होता है कि अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की शैक्षणिक चिंता के मध्य पर्याप्त सार्थक अंतर है।

तालिका 4 से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम, शहरी क्षेत्र के हिंदी माध्यम, शहरी–ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम, शहरी–ग्रामीण क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम तथा शहरी–ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी–अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक चिंता में लैंगिक भिन्नता पाई गई एवं सार्थक अंतर प्राप्त हुआ। छात्रों की शैक्षिक चिंता छात्राओं की अपेक्षा कम प्राप्त हुई है। इससे यह भी स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के अग्रेंजी माध्यम एवं शहरी क्षेत्र के अग्रेंजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक चिंता पर लैंगिक भिन्नता का कोई प्रभाव नहीं पाया गया, क्योंकि सांख्यिकी दृष्टिकोण से छात्र एवं छात्राओं की शैक्षाणिक चिंता एक समान है।

Rkfydk 4 & fgUnh ,oa vaxzsth ek/;e ds fo|ky;h okrkoj.k ds Nk=@Nk=kvksa ds 'kSf{kd fpark lacaf/kr ifj.kke dk ,Q vuqikr

Ø	{ks=	fo|ky;	Lkewg	la[;k	e/;eku	Ekkud fopyu	e/; =qfV	Økfrd vuqikr	lkFkZdrk* Lrj
1.	ग्रामीण	हिंदी माध्यम	छात्र	100	12.69	5.18	0.52	6.44	सार्थक है
			छात्रा	100	18.32	7.04	0.70		
2.	ग्रामीण	अंग्रेजी माध्यम	छात्र	100	13.11	4.40	0.44	1.70	सार्थक नहीं
			छात्रा	100	14.10	3.83	0.38		
3.	शहरी	हिंदी माध्यम	छात्र	100	11.79	3.59	0.36	7.25	सार्थक है
			छात्रा	100	17.44	6.91	0.69		
4.	शहरी	अंग्रेजी माध्यम	छात्र	100	11.72	4.22	0.42	1.79	सार्थक है
			छात्रा	100	12.66	3.14	0.31		
5.	शहरी–ग्रामीण	हिंदी माध्यम	छात्र	200	12.24	4.47	0.32	9.63	सार्थक है
		अंग्रेजी माध्यम	छात्रा	200	17.88	6.97	0.49		
6.	शहरी–ग्रामीण	अंग्रेजी माध्यम	छात्र	200	12.45	4.06	0.29	6.62	सार्थक है
			छात्रा	200	15.77	5.82	0.41		
7.	शहरी–ग्रामीण	हिंदी–अंग्रेजी माध्यम	छात्र	400	12.35	4.27	0.21	11.52	सार्थक है
			छात्रा	400	16.83	6.50	0.33		

* 0-05 lkFkZdrk Lrj ij

संभवतः इस प्रकार के परिणाम का कारण अंग्रेंजी माध्यम के उत्तम विद्यालयी वातावरण के साथ–साथ शिक्षकों का छात्राओं की शिक्षा के प्रति व्यक्तिगत ध्यान भी हो सकता है। ऐसा अनुमान है कि शिक्षक छात्राओं को निडर होकर प्रश्नों के समाधान करने हेतु प्रोत्साहित करते होंगे जिससे छात्राएँ अपनी व्यक्तिगत शैक्षणिक समस्याओं का समाधान आसानी से प्राप्त कर लेती होंगी। अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण में अध्यापकगण विभिन्न प्रकार की नवाचारी शिक्षण विधियों, शिक्षक सहायक सामग्रियों, कम्प्यूटर आधारित कक्षाओं और स्मार्ट कक्षाओं का प्रयोग कर अधिगम क्रिया को सुंदर, सरल, सुबोधगम्य एवं सुरूचिपूर्ण बना देते होंगे। जिससे छात्राएँ भी उत्साहित होकर सरलता से अपने अधिगम कार्य को पूरा कर लेती होंगी। परिणामस्वरूप उनकी शैक्षणिक चिंता भी अपेक्षाकृत कम होती होगी।

इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि हमारे समाज में अभिभावक छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की शिक्षा पर अपेक्षाकृत कम ध्यान देते होंगे एवं छात्रों से यह अपेक्षा की जाती होगी कि वह उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करें तथा भविष्य में पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करने योग्य बन सकें। जिसके कारण छात्र उच्च उपलब्धि प्राप्त करने हेतु अभिप्रेरित होते होंगे। परिणामस्वरूप छात्रों में शैक्षिक चिंता का स्तर न्यून हो जाता होगा। इस प्रकार कुमारन, सेन्थिल और सुब्रमण्यम, कदिरावन (2015), नीलम और अत्री (2013), परवथम्मा और

शरनम्मा (2010) द्वारा किए गए शोध कार्यों के परिणाम इस शोध परिणाम की पुष्टि करते हैं।

इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि वर्तमान परिवेश में जागरूकता के कारण लड़के एवं लड़कियों के बीच का अंतर प्रायः भुला दिया गया होगा। माता–पिता अपने बेटे एवं बेटियों को शिक्षा का समान अवसर प्रदान करने का प्रयास करते होंगे एवं उनको उच्च पदों पर देखने की इच्छा रखते होंगे। अभिभावक अपने बेटे एवं बेटियों को सभी प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करते होंगे एवं उच्च सफलता के लिए अभिप्रेरित करते रहते होंगे। अपने अभिभावकों की उच्च आकांक्षाओं एव ंअपेक्षाओं को पूरा करने के लिए दोनों समान रूप से दृढ़ संकल्पित रहते होंगे। बालिकाएँ स्वयं को समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने एवं अपने पैरों पर खड़ी होने के लिए सदैव प्रयासरत रहती होंगी। उनका यह प्रयास शैक्षणिक उपलब्धि के रूप में दिखाई देता होगा जिसके कारण छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक चिंता में लैंगिक भिन्नता प्राप्त नहीं हुई।

ifjdYiukvks dk lR;kiu

परिकल्पनाओं का सत्यापन प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर किया गया है।

ifjdYiuk 1 & fgnh ,o vxth ek/;e d fo|ky;h okrkoj.k d Nk=k dh 'kf{kd fprk e lkFkd vrj ugh gkxk

ग्रामीण, शहरी, शहरी–ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्रों की शैक्षिक चिंता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। तालिका 2, 3 एवं 4 से प्रदर्शित होता है कि हिंदी एवं अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्रों की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से कम हुआ। अतः परिकल्पना। 1 पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती है।

ifjdYiuk 2 & fgnh ,o vxth ek/;e d fo|ky;h okrkoj.k d Nk=kvk dh 'kf{kd fprk e lkFkd vrj ugh gkxkA

ग्रामीण, शहरी, शहरी–ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातारण का छात्राओं की शैक्षिक चिंता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। तालिका 2, 3 एवं 4 से प्रदर्शित होता है कि हिंदी एवं अग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से अधिक प्राप्त हुआ है। अतः परिकल्पना 2 पूर्ण रूप से अस्वीकृत की जाती है।

ifjdYiuk 3 & fgUnh ek/;e ds fo|ky;h okrkoj.k ds Nk= ,oa Nk=kvksa dh 'kSf{kd fpark esa lkFkZd vUrj ugha gksxk

ग्रामीण, शहरी व शहरी–ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। तालिका 2, 3 एवं 4 से प्रदर्शित होता है कि हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से अधिक प्राप्त हुआ। अतः परिकल्पना 3 पूर्ण रूप से अस्वीकृत की जाती है।

ifjdYiuk 4 & vaxzsth ek/;e ds fo|ky;h okrkoj.k ds Nk= ,oa Nk=kvksa dh 'kSf{kd fpark esa lkFkZd vUrj ugha gksxk

शहरी–ग्रामीण क्षेत्रों के अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। तालिका 2, 3 एवं 4 से प्रदर्शित होता है कि अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। क्योंकि सांख्यिकी दृष्टि से क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से अधिक प्राप्त हुआ।

ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर प्रभाव नहीं पड़ता है। तालिका 2, 3 एवं 4 से प्रदर्शित होता है कि अग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त नहीं है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से कम प्राप्त हुआ। अतः परिकल्पना 4 अस्वीकृत की जाती है।

'kks/k fu"d"kZ

इस शोध कार्य 'विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता पर प्रभाव' के अंतर्गत परिणामों की व्याख्या एवं विश्लेषण के फलस्वरूप निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

- ग्रामीण, शहरी, शहरी–ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्रों की शैक्षिक चिंता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। ग्रामीण, शहरी, शहरी–ग्रामीण हिंदी एवं अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्रों की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका 2) का मान क्रमशः 0.62, 0.13 व 0.40 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से कम है।
- ग्रामीण, शहरी, शहरी–ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्राओं की शैक्षिक चिंता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण, शहरी,

शहरी–ग्रामीण हिंदी एवं अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। क्योंकि सांख्यिकी दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका 2) का मान क्रमशः 5.27,6.29 व 8.12 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से अधिक है।

- ग्रामीण, शहरी व शहरी–ग्रामीण क्षेत्र कें हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण, शहरी व शहरी–ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका 4) का मान क्रमशः 6.44, 7.25 वे 9.63 प्राप्त हुआ, जो 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से अधिक है।
- शहरी–ग्रामीण क्षेत्रों के अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका 4) का मान 6.62 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से अधिक है।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर प्रभाव नहीं पड़ता है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के अग्रेंजी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका 4) मान क्रमशः 1.70 व 1.79 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से कम है।

'kf{kd egRo

विद्यार्थियों की शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अनेक क्षेत्रों में शोध कार्य किए जाते हैं। इनमें शोधक द्वारा किया गया शोध कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा सकता है। शोधक ने अपने शोध कार्य में विद्यालयी वातावरण का छात्र–छात्राओं की शैक्षिक चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया है। विद्यालय वातावरण एक ऐसा कारक है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करता है। इस शोध में यह पाया गया कि शहरी, ग्रामीण हिंदी माध्यम एवं अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में पर्याप्त अंतर है। एक ओर शहरी एवं अंग्रेंजी माध्यम के विद्यालय उच्च वातावरण वाले हैं। वहीं दूसरी ओर ग्रामीण एवं हिंदी माध्यम के अधिकांश विद्यालयों का वातावरण प्रायः सामान्य अथवा निम्न स्तर का है। शोध द्वारा यह सिद्ध होता है कि निम्न अथवा सामान्य स्तर के विद्यालयी वातावरण के छात्र–छात्राओं में उनकी शैक्षिक चिंता न्यून अथवा अधिक होती है। परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि कम हो जाती है। इसके विपरीत उच्च विद्यालयी वातावरण वाले छात्र–छात्राओं में शैक्षिक चिंता का स्तर सामान्य होता है। परिणामस्वरूप शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च प्राप्त होती है।

इस शोध कार्य के परिणामों का उपयोग कर हम ग्रामीण एवं हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण में सुधार करने हेतु एक अभिभावक के रूप में, एक शिक्षक के रूप में एवं एक प्रशासक के रूप में अपने उत्तरदायित्वों की समझ प्राप्त कर सकते हैं और दायित्वों को पूरा करते हुए ग्रामीण अंचलों एवं हिंदी माध्यम के विद्यालयों के वातावरण का भौतिक, सामाजिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक आदि रूपों में विकास करने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं, जिससे छात्र–छात्राओं के मध्य उचित उपलब्धि अभिप्रेरणा का विकास सुनिश्चित हो सकेगा। शैक्षिक चिंता भी सामान्य हो जाएगी और निश्चित रूप से छात्र–छात्राओं में लैंगिक भिन्नता समाप्त हो जाएगी। परिणामस्वरूप छात्र एवं छात्राएँ समान रूप से अधिगम परिणाम दे सकेंगे।

lanHk

1.अलेसी, मारियाना, राप्पो, गाएवानो, गायटैनो और आन्नामारिना पेपी, 2014, डिप्रेशन, एंजायटी एट स्कूल एंड सेल्फ–एस्टीम इन चिल्ड्रेन विद लर्निंग डिसएबिलिटीज. जर्नल ऑफ साइकॉलॉजिकल–अब्नोर्मलिटीज़ इन चिल्ड्रन, यूनिवर्सटीज़ ऑफ पलोर्मो, इटली. https://www.esciencecentral.org/journals/depression-anxiety-at-school-and-selfesteem-in-children-with-learning-disabilities-2329-9525-1000125-php?aid=28325 से लिया गया है।

2. कुमारन, सेन्थिल और कदिरावन सुब्रमण्यम. 2015 पर्सनेलिटी एंड टेस्ट एंजायटी ऑफ स्कूल स्टूडेंट्स, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन एंड साइकॉलॉजिकल रिसर्च, वॉल्यूम 4, इशू 2।

3. टालबॉट, लौरेन, 2016 टेस्ट एंजायटी – प्रीवेलेंस, इफेक्ट्स एंड इंटरवेंशंस फॉर एलेमेंट्री स्कूल स्टूडेंट्स, जेम्स मैडीसंस अंडरग्रेजुएट रिसर्च जर्नल. वॉल्यूम 3 नं. 1. पृ. 42–51. http://commons.lib.jmu.edu/jmurj/vol/iss1/5/. से लिया गया है।

4. नीलम और ए. के .अत्री. 2013. एकेडेमिक एंजायटी एंड अचीवमेंट ऑफ सें स्कूल स्टूडेंट्स, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिहेवयरल सोशल एंड मूवमेंट साइंसेज़. वॉल्यूम III पृ. 27।

5. परवथम्मा, जी. एच. और आर. शरनम्मा. 2010. एंजायटी लेवल एंड ऑफ सेल्फ कॉन्फिडेंस एंड देअर रिलेशन विद अकेडमिक अचीवमेंट. इडुट्रै – ए मंथली स्कैनर ऑफ ट्रेंडस इन एजुकेशन. 9 (7), पृ. 37–40।

6. बुच, एम. बी. 1983–88. फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन. वॉल्यूम दृ रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली – 1993–2000, सिक्स्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन. वॉल्यूम रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली।

7. राणा, रिजवान अकरम और नासिर महमूद. 2010, द रिलेशनसिप बिटवीन टेस्ट एंजायटी एंड अकेडमिक अचीवमेंट. बुलेटिन ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, वॉल्यूम 32, न. 2, पृ. 63–74 लेविट, यूजिन, ई. 1967, द साइकॉलजी ऑफ एंजायटी. पृ. 38,3,55. बौब्स मेरिल कंपनी, न्यूयॉर्क।

8. शर्मा, योगेश. 2016, एलिवेटिंग मैथमेटिक्स एंजायटी ऑफ एलिमेंट्री स्कूल स्टूडेंटस, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन एंड साइंस वॉल्यूम 2, न. 2. पृ. 506–51।

u'k dk opLo e mnh;eku f'k{kkFkh

& ohjUn tu

किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार उसकी प्रबुद्ध जनशक्ति होती है, जिसका निर्माण सुव्यवस्थित एवं व्यापक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से होता है। जन्तु जगत के अन्तर्गत ईश्वर की समस्त कृतियों में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। ईश्वर ने उसे अन्य जीवों से अधिक बुद्धि और कौशल प्रदान की है। अन्य जीवों में सीमित क्षमता होती है जबकि मनुष्य की क्षमतायें असीमित हैं। मनुष्य की क्षमताओं के अन्तर्गत उसका चिंतन, तार्किक शक्ति, बुद्धि विशेष उल्लेखनीय है।

ckyd dh f'k{kk ij okrkoj.k dk iHkko

बालक की प्रारंभिक शिक्षा घर में होती है। घर के वातावरण में ही प्रत्यक्ष रूप से एक बालक अथवा बालिका को उनके परिवार एवं उस समाज के मूल्यों का भी ज्ञान कराया जाता है। पर एक बालक अथवा बालिका के ज्ञान का क्षेत्र, विचार व मूल्यों की कोई सीमित सीमा नहीं होती है। जब बालक परिवार से निकलकर विद्यालय जाने लगता है तो उसे समाज को सुन्दर व सुदृढ़ बनाने में सहायक मूल्यों का ज्ञान कराया जाता है। वर्तमान समय में समाज में चारों ओर नशे की प्रबल प्रवृति के दर्शन होते रहते हैं। कारोना के इस दौर में मादक तत्वों के सेवन करने की प्रवृति समाज को लज्जित कर देने की हद तक बढ़ गई दिखती है।

इस काल में सम्पूर्ण जनमानस की प्रत्येक क्रियाएँ लगभग अवरुद्ध हैं। लोग सामान्य आवाजाही के लिए तरस रहे हैं और कई जगह तो खाने–पीने की सामग्री की आपूर्ति में भी असमर्थ दिखते हैं। अपने दैनिक जीवन के उपभोग में आने वाली वस्तुओं के लिए भी सामान्य जनजीवन त्राहिमाम–त्राहिमाम कर रहा है। ऐसी विकट एवं विषम महामारी की परिस्थितियों में भी भारत सरकार ने जब शराब की दुकानों का उद्घाटन किया तो राशन की दुकान पर भी इतनी भीड़ नहीं होती थी, जितनी भीड़ शराब की दुकानों के बाहर लग गई। शराब की दुकानों के बाहर 1500 से 2000 लोग एक पंक्ति में निबद्ध होकर अपनी बारी का इंतजार करते हुए समाचार पत्रों एवं समाचार चैनलों पर दिखने लगे थे। सोशल मीडिया तथा प्रिंट मीडिया ने भी इसे बखूबी प्रकाशित किया कि भारत मे किस तरीके से शराबियों एवं नशेलचियों का अनुपात बढ़ता जा रहा है।

शराब खरीदने के लिए लगे इन पंक्तियों में न केवल आदत से लाचार बेवड़े थे, अपितु उच्चस्तरीय, उन्नत एवं शालीन रहन–सहन वाले व्यक्ति भी खूब नजर आये। मात्र इतना भी होता तो भी क्षम्य था, लेकिन सोशल मीडिया पर जो चित्र दिखाये जा रहे थे उन चित्रों में शालीन घरों की महिलाएँ भी शामिल थीं। इतना ही नहीं अपने आप को आधुनिक कहने वाली

लड़कियाँ जो किसी विद्यालय या महाविद्यालय में अध्ययन करती होगीं, भी इन कतारों में खूब नजर आई। यह नजारा था हमारे छोटे–छोटे शहरों का जो नशेड़ी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित कर रहा था। नशे की होड के इस खुले प्रदर्शन का प्रभाव हमारे नवनिहालों की शिक्षा पर पड़ना निश्चित है। या तो यह प्रदर्शन हमारे बच्चों को शिक्षा से विमुख करेगा या आने वाली नस्लों को शिक्षा ग्रहण के अयोग्य बनाएगा।

u'k dk lk;k;okph curk gvk mPpLrjh; thou i)fr

यदि हम बड़े शहरों की ओर रुख करें तो यह पाते हैं कि मुंबई, दिल्ली, मद्रास, बेंगलुरु आदि अनेक ऐसे भारतीय महानगर हैं जहां लोग अपने स्तर को कायम रखने के लिए लोग एल्कोहल एवं अन्य नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। नशे की सामग्री जितनी मंहगी होती है वह उतनी ही उच्च जीवन–स्तर को प्रदर्शित करती है। फिल्म जगत में शायद ही कोई ऐसा परिवार मिले जिसमें लोग किसी न किसी रूप में नशे का सेवन न करते हों। इन परिवारों के लोग रात भर चलने वाली पार्टियों का आयोजन करवाते हैं और उसमें बढ़–चढ़ कर भाग भी लेते हैं। यह चिन्ताजनक है कि ऐसे आयोजनों का नेतृत्व हमारे युवाओं द्वारा ही किया जा रहा है। पर उससे भी कहीं ज्यादा यह चिन्ताजनक है कि इन चन्द युवाओं को नशे का महिमामंडन करता देख बाकि युवा भी नशे के प्रपंच में उलझते जा रहे हैं। नशा और अन्य जहरीले लतों को शिक्षार्थी अपने स्तर का प्रतीक समझते हैं और जो व्यक्ति एल्कोहल एवं अन्य नशीले पदार्थों को स्वीकार नहीं करता है, उसे वे पिछड़ा अथवा बैकवर्ड मानने लगते हैं।

ehfM;k }kjk eknd n0;k dk ipkj

नशीले पदार्थो के प्रचार और प्रदर्शन का कई बार मीडिया के द्वारा भी बहिष्कार नहीं किया जाता है। अकसर तो ऐसा ही होता है कि मीडिया के द्वारा विज्ञापन चार्ज लेकर, ऐसे नशीले पदार्थों का विज्ञापन दिखाया जाता है जो नवनिहालों को उनके मार्ग से भ्रष्ट करते हैं तथा नशीले पदार्थों के सेवन को प्रोत्साहित करते हैं। अभी कुछ ही दिनों पहले एक विज्ञापन प्रसारित किया जा रहा था जिसमें मुख्य अभिनेता हाथ में बोतल लिए हुए कहता है 'इस-(बोतल) के लिए बाबा कुछ भी करेगा।' दाने दाने में है, केसर का दम है। इस विज्ञापन में इतनी केसर उड़ती हुई दिखाई देती है जितनी की, भारत, में पैदा ही नहीं होती। इस केसर से प्रभावित होकर हमारे विद्यालय में प्रवेश करने वाले विद्यार्थी अपने–आप इन उत्पादों के व्यामोह में सहर्ष खीचे हुए चले जाते है।

vfHkurk gh f'k{kkFkh dk vkn'k

पहले शिक्षार्थी गॉधी, स्वामी विवेकानंद, टैगोर आदि को अपने जीवन का आदर्श मानता था और उनके द्वारा प्रतिपादित ध्येय वाक्यों को अपने जीवन में उतारने की कोशिश करता था, जिसकी झलक उसके व्यवहार एवं जीवन पर स्पष्टरुप से प्रतिभाषित होती थी। पर अब फिल्मी हीरो ही शिक्षार्थियों के रोल मॉडल है, जैसी हेयर स्टाइल इन फिल्मी नायको की होती

है हमारे विद्यालयों के शिक्षार्थी भी तुरन्त उसे अपना लेते हैं। सौंदर्य और संकल्पना से परे इन सभी स्टाइलों का तत्काल विद्यालयों में प्रवेश होता है, जिसे देखकर शिक्षक दंग रह जाते हैं तो कभी हंसने को मजबूर होते हैं।

आधुनिकता के प्रतीक एवं नायक बने हुए अभिनेताओं एवं अभिनेत्रियों के जीवन में भी आज नशा एवं नशीली वस्तुओं का अत्यन्त सहज समावेश है, जिसके कारण वे मादक पदार्थों के विज्ञापन करने में भी कहीं नहीं हिचकते। यह स्वभाविक ही होता चला जाता है क्योंकि जिसके वे स्वयं आदी हैं उससे वे बैर या द्वेष भला क्यों करेगें।

इन अभिनेताओं एवं अभिनेत्रियों को विज्ञापन के लिए मुंह मांगी रकम उपल्बध कराई जाती है जिसके एवज में वे हमारे सम्पूर्ण भारतीय समाज को एक नशे के दल दल में झोंकने से किसी प्रकार का परहेज नहीं करते हैं। क्योंकि पैसे के सामने उन्हें सम्पूर्ण दुनियां बोनी दिखाई देती है और हम जैसे नालायक लोग उनको अपने जीवन का रोल मॉडल और आइडियल समझ कर उनके द्वारा प्रसारित किए गए विज्ञापनों को बाजार में खोजते हैं, खोज कर वैसे ही उत्पाद घर लेकर आते हैं और उनका इस्तेमाल करते हैं चाहे भले हमारा स्वास्थ्य एवं समाज गर्त में ही क्यों न पहुँच जाये।

eknd inkFkk dk oxhdj.k

मादक पदार्थों को प्रमुखतः इन तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है:

1- तीव्र प्रभाव उत्पन्न करने वाले मादक पदार्थ यथा ब्राउन शुगर, हेरोइन, अफीम, चरस, स्मैक, शराब, कोकीन आदि।

2- मध्यम प्रभाव उत्पन्न करने वाले मादक पदार्थ जिसमें तम्बाकू, भाँग और गॉजा आदि आते हैं।

3- बहुत धीमी गति से प्रभाव डालने वाले मादक पदार्थ जैसे कॉफी, कोको आदि।

u'k dk f'k{kkfFk;k d thou ij iHkko

नशा मस्तिष्क के उच्च संचालन केन्द्रों पर आक्रमण करता है तथा इसे चेतना शून्य बना देता है। इस प्रकार शरीर, मन और बुद्धि को नियंत्रित करने वाले सभी तंन्त्रों पर मस्तिष्क का नियंत्रण ढीला पड़ जाता है। मदिरा पान करने वाले व्यक्ति का अपने व्यवहार पर नियंत्रण नहीं रह पाता है। वह उन आवेगों की संतुष्टि में लगा रहता है जिनको सामान्य अवस्था में वह रोके रहता था। उसमें कुछ मात्रा में गतिवाही असमन्वय (Motor Incordination) भी हो जाता है। ठण्ड, दर्द आदि की संवेदना व प्रभेद की क्रियाएँ कम हो जाती है। वह उत्साह, खर्चीलापन और स्वस्थ्य होने का अनुभव करता है। ऐसे में वह दुखद वास्तविक परिस्थियों को विस्मृत कर देता है जिससे व्यक्ति में उन नकारात्मक विषयों के प्रति भी आत्मसम्मान और

आत्मप्रशंसा की भावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस प्रकार वह संवेगात्मक रूप से उद्दीप्त हो जाता है जबकि उसकी बौद्धिक एवं गतिवाही क्रियाएँ मन्द पड़ जाती हैं।

ऐसे अनेक कारण हैं जिनके परिणामस्वरुप मादक पदार्थो के उत्पादन एवं उपयोग में निरंतर वृद्धि हो रही है। जालंधर व नई दिल्ली के दो समाचार पत्रों की सूचनाएँ इस प्रसंग में दृष्टव्य हैं:

जालंधर में गत 1 जून 2020 (वार्ता) को जारी आंकडों के अनुसार देश में पिछले सात वर्षों के दौरान शराब की खपत में प्रति व्यक्ति 38 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के आंकड़ों के अनुसार देश में वर्ष 2005 के प्रति व्यक्ति 1–6 लीटर शराब की खपत के मुकाबले वर्ष 2012 में 38 प्रतिशत बढ़ कर 2–2 लीटर हो गई है। एनसीआरबी के आंकड़ों अनुसार अत्यधिक शराब के सेवन से हर दिन 15 लोगों की मौत होती है।

भारत में पिछले दशक के दौरान शराब की खपत बढी है। 15 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के 32 प्रतिशत से अधिक पुरूष और 10.6 प्रतिशत महिलाएं शराब पीती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट में 2010 के आंकडों के आधार पर यह जानकारी दी गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत और चीन में शराब पीने की आदत बढ रही है क्योंकि लोग ज्यादा धन अर्जित कर रहे हैं।

धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इससे कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी होती है और यह चेतावनी सभी तम्बाकू उत्पादों पर अनिवार्य रूप से लिखी होती है, और लगभग सभी को यह पता भी है, परन्तु लोग फिर भी इसका सेवन बड़े ही चाव से करते हैं। यह मनुष्य की दुर्बलता ही है कि वह उसके सेवन का आरंभ धीरे–धीरे करता है, पर कुछ ही दिनों में इसका आदी हो जाता है। एक बार आदी हो जाने के बाद हम उसका सेवन करें, न करें तलब ही सब कुछ कराती है।

पंजाब, मणिपुर सहित पूर्वोत्तर के कई राज्यों में नशे की प्रवृति भयावह रुप ले चुकी है। देश के अन्य कई राज्य भी इसी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। ऐसे में आवश्यक है कि शैक्षिक संस्थानों में नशाखोरी के खिलाफ व्यापक जंग छेड़ी जाए अन्यथा देश का युवा वर्ग देखतें ही देखते नशे की चपेट में जा अपने सभी कर्तव्यों से विमुख खड़ा दिखेगा।

संदर्भ

1. www-univarta-com/news/states/story/504592-html#6Ws3VBr3BHD5R3UV-99
2. http://www-khaskhabar-com/hindi&news National&liquor&consumption&in&india&increased

lkekftd 'kks/k v/;;u esa 'kks/k izfof/k dk iz;ksx

& Ñ".k dqekj d'kjokuh

& t; izdk'k flag

सामाजिक शोध प्रविधि को समझने से पहले हमें शोध के अर्थ को समझना अत्यन्त आवश्यक है। मनुष्य एक बौद्धिक एवं चिंतनशील प्राणी है, जो अपनी जिज्ञासाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति एवं प्रकृति के कारण समाज में घटित विभिन्न प्रकार की घटनाओं के आधार पर अनेकों प्रकार के प्रश्नों को खड़ा करता है और उन प्रश्नों के उत्तरों को स्वयं ही खोजने का प्रयास करता है, जिसकी पूर्ति शोध के माध्यम से होती है। सामाजिक शोध अथवा अनुसंधान की प्रविधियों में वैज्ञानिक प्रक्रिया में मूलतः शोध के उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को वैज्ञानिक विधि की प्रक्रियाओं के उपयोग के द्वारा किसी भी विषय क्षेत्र में नवीन ज्ञान की खोज अथवा पुराने ज्ञान के पुनः परीक्षण या किसी वैज्ञानिक विधि से विश्लेषण के संमकों/प्रश्नों के उत्तरों के खोज एवं ज्ञात करने की विधि से प्राप्त परिणामों के नवीन तथ्यों को ही शोध प्रविधि (Research Methodology) कहते हैं।

शोध एक सतत्, क्रमबद्ध, व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक प्रयोग की वैज्ञानिक प्रक्रिया है, इसमें निरंतरता, तार्किकता, योजनाबद्धता, प्रमाणिकता, क्रमबद्धता, सुसंगता एवं अद्यतनता पायी जाती है। शोध सामाजिक विज्ञान एवं प्राकृतिक विज्ञान दोनों ही विषय क्षेत्रों में होता है। जब कोई शोध सामाजिक विज्ञान विषयों के क्षेत्र में होता है, तो उसे सामाजिक शोध कहा जाता है तथा जब कोई शोध प्राकृतिक एवं जीव विज्ञान विषयों के क्षेत्र में होता है, तो उसे वैज्ञानिक शोध कहा जाता है, क्योंकि किसी भी शोध अध्ययन कार्य के निष्कर्षों को वैज्ञानिक विधियों/शोध प्रविधियों के माध्यम से ज्ञात किया जाता है। वैज्ञानिक विधियों से तात्पर्य यह है कि किसी भी सामाजिक शोध के अध्ययन कार्य को पूर्ण करने के लिये एक सैद्धांतिक तर्कसंगत शोध प्रक्रिया का प्रयोग आवश्यक होता है।

oSKkfud ,oa lkekftd vuqla/kku dh ifjHkk"kk

शोध की वैज्ञानिक पद्धति की परिभाषा को अनेकों विद्धानों ने अपने–अपने मतों के अनुसार निम्नानुसार परिभाषित किया है:

पिर्यसन (1911) का मानना है कि सत्य तक पहुँचने के लिये कोई लघु मार्ग नहीं है और विश्व का ज्ञान प्राप्त करने के लिये वैज्ञानिक पद्धति के द्वार से गुजरना ही होता है।

रीड (1999) का मानना है कि हमेशा वह नहीं होता जिसे आप वैज्ञानिक कह सकें, लेकिन शोध कभी–कभी उपयोगी जानकारी एकत्रित करने तक ही सीमित हो सकता है।

बहुत–सी ऐसी जानकारी किसी विशेष कार्य का नियोजन करने एवं महत्वपूर्ण निर्णयों को लेने के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार के अनुसंधान कार्य में एकत्रित की गयी सामग्री निरंतर वैज्ञानिक सिद्धान्त को निर्माण की ओर ले जा सकती है।

वोल्फ (1925) का मानना है कि व्यापक अर्थ में कोई भी अनुसन्धान पद्धति जिसके द्वारा विज्ञान का निर्माण हुआ हो अथवा उसका विस्तार किया जा रहा हो, वैज्ञानिक पद्धति कहलाती है, इसलिये इन्होंने अनुसन्धान पद्धति को ही वैज्ञानिक विधि कहा है।

यंग (1960) का मानना है कि सामाजिक अनुसंधान को ऐसे वैज्ञानिक प्रयत्न के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसका उद्देश्य तार्किक एवं क्रमबद्ध पद्धतियों के द्वारा नवीन तथ्यों की खोज अथवा पुराने तथ्यों की परीक्षा और सत्यापन, उनके क्रमों, पारस्परिक सम्बन्धों, कार्य–कारण की व्याख्या एवं उन्हें संचालित करने वाले स्वाभाविक नियमों का विश्लेषण करता है।

मोजर (1961) का मानना है कि सामाजिक अनुसंधान घटनाओं और समस्याओं के सम्बन्ध में नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिये अन्वेषण कार्य को हम सामाजिक अनुसंधान अथवा शोध कहते हैं।

lkekftd vuqla/kku ds mís';

सामाजिक अनुसंधान के अनेंकों उद्देश्य हैं। इनके प्राथमिक उद्देश्यों में तात्कालिक अथवा दूरस्थ सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझना और उस पर नियंत्रण पाना प्रमुख है। गुडे एवं हॉट तथा पी. वी. यंग के अलावा और भी अनेकों विद्वानों ने इसके उद्देश्यों को वर्गीकृत किया है। गुडे एवं हॉट (1952) ने सामाजिक अनुसंधान के उद्देश्यों को दो भागों में वर्गीकृत किया है – एकः सैद्धान्तिक अनुसंधान एवं दूसराः व्यावहारिक अनुसंधान। सैद्धान्तिक सामाजिक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य नये तथ्यों को ज्ञात करना, सिद्धान्त की जाँच करना, अवधारणात्मक प्रमाणिकता में सहायक होना और उपलब्ध सिद्धान्त को एकत्रित करने की विधियों से संबंधित है। व्यावहारिक सामाजिक अनुसंधान का उद्देश्य व्यावहारिक समस्याओं के कारणों को ज्ञात करने और उनके समाधानों का पता लगाने के नीति निर्धारण के लिये आवश्यक सुधार करने में सहायक होता है।

यंग (1960) ने सामाजिक अनुसंधान के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि सामाजिक अनुसंधान का मूलभूत उद्देश्य चाहे वह तत्कालीन हो या दीर्घकालीन, सामाजिक जीवन को समझने और ऐसा करके उस पर अधिक नियंत्रण प्राप्त करने में सहायक होना होता है, क्योंकि सामाजिक शोधकर्ता न तो व्यावहारिक समस्याओं और ना ही तात्कालिक सामाजिक नियोजन अथवा सामाजिक सुधार से संबंधित होता है। वह प्रशासकीय परिवर्तनों एवं प्रक्रियाओं के विश्लेषण से भी संबंधित नहीं होता है। वह अपने को जीवन और कार्य

कुशलता एवं कल्याण के पूर्व स्थापित मापदण्डों के आधार पर निर्देशित भी नहीं करता है तथा सामाजिक घटनाओं को सुधार की दृष्टि से इन आँकड़ों के मापदण्डों को मापता भी नहीं है। सामाजिक शोधकर्ता की मुख्य अभिरूचि सामाजिक प्रक्रियाओं की खोज, व्याख्या, व्यवहार के प्रतिमानों एवं विशेष सामाजिक घटनाओं तथा सामान्यतः सामाजिक समूहों में लागू होने वाली समानताओं एवं असमानताओं में होती है।

सामाजिक अनुसंधान के कुछ अन्य उद्देश्यों में पुराने तथ्यों अथवा समकों का परीक्षण कर नये तथ्यों अथवा समकों को अद्यतन एवं पुर्नःवर्द्धित कर विभिन्न चरों एवं सहचरों के मध्य कार्य संबंधों को ज्ञात करना, ज्ञान का विस्तार करना, सामान्यीकरण करना एवं प्राप्त ज्ञान के आधार पर सिद्धांत का निर्माण करने संबंधी प्रक्रियाओं से है। सामाजिक अनुसंधान से प्राप्त सूचनाएं सामाजिक नीति निर्माण या सामाजिक जीवन की गुणवता में सुधार या सामाजिक समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकती हैं। व्यावहारिक सिद्धान्त की दृष्टि से यदि इसे देखा जाये तो इसे उपयोगितावादी कहा जायेगा।

lkekftd vu|l/kku d: lkiku

सामाजिक अनुसंधान की प्रकृति वैज्ञानिक होती है। वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकृति से अभिप्राय यह है कि शोध में समस्या विशेष अध्ययन एक व्यावहारिक पद्धति के द्वारा किया जाता है और शोध अध्ययन के निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है कि उसकी वैषयिकता के स्थान पर वस्तुनिष्ठता हो सके। अनुसंधान की पूर्ण प्रक्रिया शोध प्रविधि के विभिन्न सोपानों में होती है। सामाजिक अनुसंधान की प्रक्रिया को एक सोपान से दूसरे सोपान में प्रवेश करते हुए शोध अध्ययन को पूर्ण किया जाता है। सामाजिक अनुसंधान में भी कितने सोपान होते हैं, इसमें भी विद्वानों में काफी मतभेद हैं, इस कारण से अनुसंधान में सोपानों की पदावलियों को भी विद्वानों ने पृथक–पृथक तरह से नामांकित किया है। सामाजिक अनुसंधान के मध्य कुछ सोपान आगे–पीछे हो सकते हैं, इससे अनुसंधान की वैज्ञानिकता पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है। इसी प्रकार विभिन्न प्रकार के विद्वानों के सोपानों के आधार पर वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा (2011ः छठा संस्करण) ने रिसर्च मेथडॉलॉजी की विषय–सूची के सोपानों को 35 अध्यायों में निम्नानुसार विभक्त किया हैः

1. विज्ञान और वैज्ञानिक पद्धति (Science and Scientific Method),
2. सामाजिक अनुसंधानः अर्थ एवं प्रकृति (Social Research: Meaning and Nature)
3. सामाजिक अनुसंधान के प्रकार (Types of Social Research),
4. सामाजिक अनुसंधान की प्रक्रिया (Process of Social Research),

5. अनुसंधान समस्या का चयन एवं निरूपण (Selection and Formulation of Research Problem),
6. प्रतिरूप एवं पैराडाइम (Models and Paradigms),
7. सिद्धान्त निर्माण (Theory-Paradigms)
8. तथ्य एवं सिद्धांतः परिभाषाएँ एवं अन्तः सम्बन्ध (Fact and Theory: Definitions and Interrelations)
9. अनुसंधान प्ररचना (Research Design)
10. अवधारणा (Concept),
11. प्राक्कल्पना (Hypothesis),
12. चर, वाक्य विन्यास, परिभाषाएँ, स्वयं सिद्धियाँ और मान्यताएँ (Variables, Constructs, Definitions, Postulates and Assumptions),
13. निदर्शन (Sampling),
14. सामग्रीः प्रकार एवं स्रोत (Data: Types and Sources),
15. अवलोकन (Observation),
16. साक्षात्कार (Interview),
17. अनुसूची (Schedule),
18. प्रश्नावली (Questionnaire),
19. अध्ययन के विभिन्न प्रकारः पेनल, केस एवं क्षेत्रीय (Various Forms of Studies: Panel, Case and Area),
20. अन्तर्वस्तु विश्लेषण (Content Analysis),
21. प्रक्षेपी प्रतिधियाँ (Projective Techniques),
22. सामग्री का विश्लेषणः सम्पादन, गुण–स्थान, वर्गीकरण, संकेतीकरण एवं सारणीयन (Data Analysis: Editing, Property Space, Classification, Codification and Tabulation),
23. सामग्री का विश्लेषणः विश्लेषण, व्याख्या एवं प्रतिवेदन–लेखन (Data Analysis:, Explanation and Report Writing),
24. सामाजिक सांख्यिकीः विशेषताएँ, उपयोगिताएँ एवं सीमाएँ (Social Statistics: Characteristics, Uses and Limitations),
25. सांख्यिकीय माध्यः समान्तर माध्य, भूयिष्ठक (बहुलक) तथा माध्यिका (Statistical Averages: Mean, Mode and Median),
26. सूचकांक (Index Number),
27. साई–वर्ग परीक्षण (Chi-Square Test),
28. समंको का चित्रमय प्रदर्शन (Diagrammatic Presentation of Statistical Data),
29. प्रमापन प्रविधियाँ (Scaling Techniques),

30. अन्वेषण के तर्क, मूल्य और सामाजिक विज्ञान (Logic of Inquiry, Values and Social Sciences),

31. कम्प्यूटर और अनुसंधान (Computer and Research),

32. रेखाचित्र एवं आवृति चित्र (Graphs and Histograms),

33. अपकिरण (Disperson),

34. सांख्यिकीय विश्लेषणः सहसम्बन्ध (Statistical Analysis: Correlation),

35. प्रसरण एवं सहप्रसरण का सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Analysis of Variance and Covariance).

रिसर्च मेथडॉलॉजी की पुस्तक के उपरोक्त विभिन्न अध्यायों में उपलब्ध वैज्ञानिक एवं सामाजिक अवधारणाओं, सिद्धान्तों, उपकल्पनाओं, सांख्यिकीय विधियों, विश्लेषण, निर्दशन, प्रमापन प्रविविधियाँ, प्रश्नावली, साक्षात्कार, अनुसूची, समंकों का चित्रमय प्रदर्शन, एवं रेखाचित्रों तथा आवृत्ति चित्रों आदि के प्राकृतिक विज्ञानों एवं सामाजिक विज्ञानों की पद्धति के सोपानों की वैज्ञानिक एवं सामाजिक प्रकृति का शोध अध्ययन निम्नानुसार विज्ञान की पद्धति को आधार मानकर एवं सामाजिक विज्ञानों की विशेषताओं, तत्वों, लक्षणों तथा अध्ययन की पद्धतियों का विज्ञान की प्रकृति से तुलना करते हुये वास्तविक अध्ययन की सभी प्रक्रियाओं के साथ किया जायेगा।

oKkfud 'kks?k i)fr dk ifØ;kRed lksiku

सामान्यतः प्राकृतिक विज्ञान संबंधी शोध में एक वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर निम्नांकित सोपानों की विवेचना करना आवश्यक हैः

1. leL;k dk p;u (Selection of the Problem): सांसारिक घटनाएं एवं समस्यायें असंख्य हैं। वैज्ञानिक शोधकर्ता को अपने विषय, ज्ञान, उपलब्ध साहित्य एवं क्षमता आदि के आधार पर सर्वप्रथम समस्या का चयन करना होता है कि वह किस समस्या का अध्ययन करना चाहता है।

2- mís';kssa dk fu/kkZj.k (Determination of Objectives): वैज्ञानिक शोध अध्ययन की प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण सोपान समस्या से संबंधित उद्देश्यों को निश्चित करने से है अर्थात् किसी भी शोध अध्ययन को प्रारम्भ करने से पहले उस अध्ययन के उद्देश्यों को निश्चित करना अत्यन्त आवश्यक होता है, किन्तु यह अवधारणा वैज्ञानिक पद्धति पर लागू नहीं होती है।

3- midYiuk dk fu/kkZj.k (Formulation of Hypothesis): वैज्ञानिक पद्धति में शोध अध्ययन उपकल्पनाओं से आरम्भ होता है, यह एक कच्चा सिद्धान्त होता है, जिसकी सत्यता का परीक्षण वैज्ञानिक अध्ययन द्वारा किया जाता है और यह सत्य एवं सही पाये जाने पर एक प्रमाणिक सिद्धान्त बन जाता है।

4-v/;;u {ks= dk p;u (Selection of Universe): वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार उपकल्पना के निर्माण के बाद ऐसे अध्ययन क्षेत्र का चयन किया जाता है, जिसमें उपकल्पना

से संबंधित तथ्य उपलब्ध हों। उपकल्पना की सत्यता को परखने के लिये अध्ययन क्षेत्र का चयन एक महत्वपूर्ण सोपान है।

5- ifof/k;k dk p;u (Selection of Techniques): वैज्ञानिक पद्धति के अुनसार शोध अध्ययन के क्षेत्र से संबंधित तथ्यों का संकलन करने के लिये अनेकों प्रविधियों एवं यंत्रों का उपयोग समस्या चयन या उपकल्पनाओं की प्रकृति एवं संबंधित कारकों, तथ्यों और उसकी परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

6- voyksdu (Observation): गुडे एवं हॉट ने अभिव्यक्त किया है कि वैज्ञानिक अध्ययन अवलोकन से प्रारम्भ होता हैं और अपनी प्रमाणिकता के लिये अवलोकन पर ही आकर समाप्त होता है। अतः अवलोकन के द्वारा ही वैज्ञानिक तथ्यों की सत्यता का पता लगता है कि वह कैसे अवलोकन करेगा।

7- rF; ladyu (Collection of Data): वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार तथ्य संकलन का कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण एवं अध्ययन का सबसे मुख्य आधार है। इसमें तथ्यों का संकलन करते समय अनेक बातों को ध्यान में रखा जाता है। वैज्ञानिक को तथ्य निष्पक्ष रूप से एकत्रित किये जायेगें तो वह अध्ययन नहीं कहलायेगा।

8- rF;ksa dk oxhZdj.k (Classification of Data): वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार शोध अध्ययन में उपकल्पना की सत्यता का परीक्षण तब तक नहीं किया जा सकता जब तक कि तथ्यों का उनके गुण संबंधों के आधार पर वर्गीकरण नहीं किया जाये, इसलिये वैज्ञानिक पद्धति में तथ्यों का वर्गीकरण अत्यन्त आवश्यक है।

9- lkekU;hdj.k (Generalization): वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार शोध अध्ययन का महत्वपूर्ण सोपान सामान्यीकरण अथवा उपकल्पना के परीक्षण का प्रमुख सोपान है, इसे अनेकों नामों से पुकारा जाता है, जैंसे–निष्कर्ष, सुझाव, उपसंहार, सामान्यीकरण एवं नियमों का प्रतिपादन आदि।

10- izfronu (Report): गुडे एवं हॉट ने लिखा है कि वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार किया गया शोध अध्ययन सामान्यीकरण एवं सैद्धान्तिकरण पर ही समाप्त नहीं होता है, बल्कि शोध अध्ययन की पूर्ण प्रक्रिया को जस का तस लिखना अत्यन्त आवश्यक है, इसे अनुसंधानकर्ता के लिये प्रतिवेदन के रूप में समस्या के चयन से लेकन उपकल्पना की सत्यता के परीक्षण तक को जो कुछ उसने किया है, उसे उसी प्रकार से लिपिबद्ध कर देना चाहिये, इत्यादि। कार्ल पियर्सन ने इसके महत्व को अभिव्यक्त करते हुये लिखा है कि सत्य तक पहुँचने के लिये कोई संक्षिप्त मार्ग नहीं है। विश्व का ज्ञान प्राप्त करने के लिये वैज्ञानिक पद्धति के द्वार मार्ग के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं है।

lkekftd foKku 'kks/k i)fr ds izfØ;kRed lksiku

सामान्यतः सामाजिक विज्ञानों से संबंधी शोध में एक वैज्ञानिक पद्धति की प्रकृति के आधार पर निम्नांकित सोपानों की विवेचना करना आवश्यक है:

1. वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग (Use of Scientific Method) : सामाजिक विज्ञानों में समाज, सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक व्यवस्थाओं, घटनाओं आदि का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति की प्रकृति के द्वारा शोध अध्ययन की पूरी योजना को तैयार करने के साथ प्रारम्भ किया जाता है। यह सामाजिक विज्ञानों में तथ्यों को एकत्रित करने का सबसे प्रमुख सोपान है, इसमें वैज्ञानिक विधियों एवं उपकरणों, अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची, प्रश्नावली, समाजमिति, सामाजिक सर्वेक्षण विधि, वैयक्तिक ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति आदि का प्रयोग किया जाता है और तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन, विश्लेषण करने में सांख्यिकीय पद्धतियों, जैसे – प्रतिशत, औसत, विचलन आदि का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार के शोध में अधिकांशतः प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाता है, इसी शोध अध्ययन की पद्धति के आधार पर सामाजिक विज्ञानों की प्रकृति पूर्णतः वैज्ञानिक है।

2.voykdu (Observation) : सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में वैज्ञानिक अध्ययन पद्धति की प्रकृति के अनुसार तथ्य संकलन के सोपान का बहुत महत्व है। प्राकृतिक विज्ञानों में इस प्रकार के अवलोकन विधि की सहायता से तथ्य एकत्रित किये जाते हैं यथा, एक–सहभागिक, दूसरा–अर्द्ध सहभागिक एवं तीसरा–असहभागिक।

3. तथ्यों का विश्लेषण (Analysis of Data): सामाजिक विज्ञान अनुसंधानों में अवलोकन के द्वारा तथ्य को एकत्रित करने के बाद उनके कार्यों को अलग–अलग वैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन, और विश्लेषण किया जाता है और उनके परस्पर गुण–संबंध का वर्णन किया जाता है।

4. सामान्यीकरण (Generalization): वैज्ञानिक अध्ययन एवं सामाजिक विज्ञानों में सामान्यीकरण प्रमुख रूप से अन्तिम सोपान होता है। इसमें प्रथम सोपान के रूप में उपकल्पना का निर्माण कर, उसकी जाँच की जाती है तथा तथ्यों का सामान्यीकरण किया जाता है।

5- D;k g\ dk v/;;u (To study 'What is it'): आर. के. मुखर्जी के अनुसार सत्यता को जानने के लिये अनुसंधान में निम्न 5 मौलिक प्रश्नों की घटनाओं का अध्ययन में उत्तर आवश्यक होता है:

- क्या है? (What is it?)
- कैंसे है? (How is it?)
- क्यों है? (Why is it?)
- क्या होगा? (What it bill be?)
- क्या होना चाहिये? (What should it be?)

6- dk;l&dkj.k lEcU/kk dh 0;k[;k (Explanation of Cause-Effect Relations): सामाजिक विज्ञानों में कारकों का अध्ययन किया जाता है, जिसमें घटना के परिणामों के कारणों की खोज की जाती है, कोई घटना किन–किन कारणों से घटती है, इसका वर्णन किया जाता है।

7- fl)kUrk dk fuek.k (Constructs Theory) : सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में उपकल्पना का निर्माण, तथ्यों का संकलन, वर्गीकरण, सारणीयन, संगठन, विश्लेषण और व्याख्या आदि की जाती है तथा अन्त में सिद्धान्त का निर्माण किया जाता है।

8- fl)kUrk dh tkp (Tests Theories): सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में सिद्धान्तों की जाँच का परीक्षण इतिहास के प्रमाण के आधार पर ज्ञात किया जाता है और सामाजिक वैज्ञानिक सिद्धान्तों का परीक्षण, तथ्यों के आधार पर प्रमाणित सिद्ध नहीं होते, बल्कि वे तथ्यों में परिमार्जन एवं संशोधन को सुनिश्चित करते हैं।

9- fl)kUr dh lkoHkkfedrk (Universality of Theory): प्राकृतिक विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान के सिद्धान्त सार्वभौमिक होते हैं और ये सिद्धान्त निश्चित परिस्थितियों में कारकों के परस्पर कारण के प्रभाव संबंधों की व्याख्या करते हैं। अतः सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के सोपानों के अनुसार तथ्यों का अध्ययन करके सिद्धान्तों का निर्माण करते हैं, जिससे इनकी जाँच करने में सुविधा एवं सरलता होती है।

10- Hkfo";ok.kh dh {kerk (Capability of Forecast): सामाजिक विज्ञान क्या है? अध्ययन करता है तथा उसके आधार पर क्या होगा ? की भविष्यवाणी करता है, इसलिये इन विज्ञानों की प्रकृति वैज्ञानिक है। इस पर मेक्स वेबर ने कहा है कि घटना के अध्ययन में उसके घटनाक्रम के इतिहास का अध्ययन करना चाहिये। इन्होंने समाजशास्त्र घटना का अध्ययन करके आगे बढ़ने वाली स्थिति या परिणाम की भविष्यवाणी करता है। समाजशास्त्री क्या है? के आधार पर क्या होगा? – निष्कर्ष में व्यक्त करता है।

fu"d"k

रिसर्च मेथडॉलॉजी की उपरोक्त विस्तृत समीक्षा के परिप्रेक्ष्य में निष्कर्ष यह है कि सामाजिक विज्ञानों के अनुसंधान में वैज्ञानिक पद्धति की प्रकृति सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करती है, और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पद्धति अज्ञानता का विनाश करती है। जब किसी सामाजिक विज्ञानों के अनुसंधान में हम वृद्धों की समस्याओं, मजदूरों का शोषण, महिलाओं का उत्पीड़न, समाज के शोषित वर्ग की समस्याएं एवं उत्पीड़न एवं उनकी सोचनीय कार्य दशाओं, बाल मजदूरी, महिला कामगारों की समस्याओं, भिक्षावृति, वेश्यावृति, बेरोजगारी आदि–आदि तथ्यों पर सामाजिक शोध करते हैं, तो उनके प्राप्त परिणामों से न केवल समाज कल्याण के क्षेत्र में सहायता प्राप्त होती है, बल्कि यह सामाजिक नीतियों के निर्माण की परिणीतियों को निर्मित करने का आधार भी होती है और सामाजिक अनुसंधान से सैद्धान्तिक एवं अवधारणात्मक ज्ञान भी विकसित होता है।

lnHk

1. गुडे, डब्ल्यू.जे.एंड हाट, पी.के. (1952): मैथड इन सोशियल रिसर्च, टोक्योः मैकग्रो हिल बुक कम्पनी; पृष्ठ 7–8

2. मूजर, सी. ए. (1961): सर्वे मैथ्ड इन सोशियल इंवैस्टीगेशन; पृष्ठ 3
3. पीयरसन, कार्ल (1911): द ग्रामर आफ साइंस. लन्दनः ए एंड सी ब्लॉक;पृष्ठ 10
4. रैड विलियम जेम्स एंड फार्च्युन, एनी ई. (1999): रिसर्च इन सोशियल वर्क; तीसरा संस्करण, कोलम्बिया युनिवसिटी प्रैस; पृष्ठ 24–25.
5. वॉल्फ,ए . (1925): एसैंसियल आफ साइंटिफिक मैथड्स लन्दनः जार्ज एलेन एंड अनविन लि., पृष्ठ 15
6. यंग, पी.वी. (1968): साइंटिफिक सोशियल सर्वे एंड रिसर्च, नई दिल्लीः हॉल आफ इंडिया प्रा. लि., पृष्ठ 126–132

u l:r] u ikih

मैं सोचता हूं कि वर्तमान जीवन से 'संत' शब्द निकाल दिया जाना चाहिए। यह इतना पवित्र शब्द है कि इसे यूं ही किसी के साथ जोड़ देना उचित नहीं है। मेरे जैसे आदमी के साथ तो और भी नहीं, जो बस एक साधारण–सा सत्यशोधक होने का दावा करता है, जिसे अपनी सीमाओं और अपनी त्रुटियों का अहसास है और जब–जब उससे त्रुटियां हो जाती हैं, तब–तब बिना हिचक उन्हें स्वीकार कर लेता है और जो निस्संकोच इस बात को मानता है कि वह किसी वैज्ञानिक की भांति, जीवन की कुछ 'शाश्वत' सच्चाइयों के बारे में प्रयोग कर रहा है, किंतु वैज्ञानिक होने का दावा भी वह नहीं कर सकता, क्योंकि अपनी पद्धतियों की वैज्ञानिक यथार्थता का उसके पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है और न ही वह अपने प्रयोगों के ऐसे प्रत्यक्ष परिणाम दिखा सकता है जैसे कि आधुनिक विज्ञान को चाहिए।

मुझे संत कहना यदि संभव भी हो तो अभी उसका समय बहुत दूर है। मैं किसी भी रूप या आकार में अपने आपको संत अनुभव नहीं करता। लेकिन अनजाने में हुई भूलचूकों के बावजूद मैं अपने आपको सत्य का पक्षधर अवश्य अनुभव करता हूं।

&egkRek xka/kh

cfu;knh rkyhe l: ubl f'k{kk uhfr rd

& txekgu flag jktiwr

इक्कीसवीं सदी में राष्ट्रों की प्रगति, विकास और साख का मूल आधार उनकी ज्ञान संपदा ही होगी। यह आधार जितना सशक्त, समेकित, सजग तथा परिवर्तनों के प्रति सतर्क और गतिशील होगा, राष्ट्र की प्रगति में नागरिकों की भागीदारी भी उतनी ही विस्तृत और सर्वव्यापी होगी। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए भारत में पहली आवश्यकता हर व्यक्ति तक अच्छी गुणवत्ता तथा उपयोगी कौशलों की ग्राह्यता से परिपूर्ण शिक्षा पहुंचाने की होगी। इस स्थिति में अभी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 नई सकारात्मक संभावनाओं को देश और व्यवस्था के समक्ष प्रस्तुत करती है।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के समय महात्मा गांधी ने शिक्षा पर विशेष जोर दिया था। स्वतंत्रता के बाद जो स्थिति बनी है, और जो समस्याएं उभरी हैं, उनका समाधान निकालने के लिए गांधीजी द्वारा सन् 1937 में प्रस्तावित बुनियादी तालीम के तत्वों को समझ कर ही नई शिक्षा नीति में प्रस्तावित शैक्षिक सुधारों की संभावनाओं को व्यावहारिक रूप दिया जा सकेगा। भारत में शिक्षा व्यवस्था में जब भी परिवर्तन और सुधारों पर चर्चा होती है, महात्मा गांधी के शिक्षा संबंधी प्रयोगों, उनके द्वारा प्रतिपादित शिक्षा दर्शन और नई तालीम का संदर्भ किसी न किसी रूप में उपस्थित हो ही जाता है। गांधी ने दक्षिण अफ्रीका के अपने आश्रमों से लेकर भारत में स्थापित अपने प्रत्येक आश्रम में शिक्षा देने की व्यवस्था की, स्वयं भागीदारी की, और लगभग चार दशक के अपने प्रयोगों के अनुभवों के आधार पर भारत के लिए जो शिक्षा व्यवस्था प्रतिपादित की वह बेसिक शिक्षा, नई तालीम या बुनियादी तालीम के नाम से जानी गई। अंग्रेजों द्वारा प्रत्यारोपित शिक्षा के बारे में गांधीजी ने 'हिंद स्वराज' में खुल कर लिखा कि जो शिक्षा दी जा रही है उससे ' हम मनुष्य नहीं बनते और उससे हम अपना कर्तव्य नहीं जान सकते।' शिक्षित व्यक्ति की संकल्पना को 'हिंद स्वराज' में गांधीजी डॉ. हक्सले के एक उद्धरण से व्यक्त करते हैं: 'उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसके शरीर को ऐसी आदत डाली गई है कि वह उसके वश में रहता है, जिसका शरीर चैन से और आसानी से सौंपा हुआ काम करता है।' उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसकी बुद्धि शुद्ध, शान्त और न्यायदर्शी है। मन कुदरती कानूनों से भरा है और जिसकी इंद्रिया उसके बस में हैं, जिसके मन में भावनाएं बिलकुल शुद्ध हैं, जिसे नीच कामों से नफरत है और जो दूसरों को अपना मानता है। ऐसा आदमी ही सच्चा शिक्षित (तालीमशुदा) माना जाएगा, क्योंकि कुदरत उसका अच्छा उपयोग करेगी और वह कुदरत का अच्छा उपयोग करेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार सिद्धांत का वर्णन यों प्रारंभ होता है: 'शैक्षिक प्रणाली का मुख्य उद्देश्य अच्छे इंसान का विकास करना है – जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हो, जिसमें करूणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और

रचनात्मक' कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हों। इसका उद्देश्य ऐसे उत्पादक लोगों को तैयार करना है, जो कि अपने संविधान द्वारा परिकल्पित–समावेशी, और बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान करें। इसमें आगे यह भी कहा गया है कि 'हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना' होगा, और इसके लिए शिक्षकों और अभिभावकों को तैयार किया जाएगा। इस तत्व को नई शिक्षा नीति में समाहित किया गया है, आज की भाषा–मुहावरे–में वर्णित किया गया है।

विनोबा भावे नई तालीम को 'नित्य नए समाज की रचना करने वाली तालीम' कहते थे। इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में जब हर तरफ शैक्षिक परिवतनों की चर्चा हो रही है, यह विचार कितना दूरदृष्टि पूर्ण माना जाएगा! वे नई तालीम देने के लिए उन्हें ही समर्थ मानते थे, जिनकी शुद्धि हो चुकी हो, जिनका विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने का विस्तृत अनुभव हो, और वे उसका समुचित उपयोग करने को उत्सुक हों। नई शिक्षा नीति में लगभग हर स्तर पर और हर तरफ स्थानीय उत्पादकता की ओर सभी का ध्यान जा रहा है, कौशल विकास को प्रारंभ से ही लाने का विचार स्वीकृत हो रहा है, संपूर्ण व्यक्तित्व विकास को नीति में प्रमुखता से स्थान दिया जा रहा है; सभी को समान अवसर देने का वचन दिया जा रहा है। अगर गहराई से समझा जाए तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि नई तालिम की संकल्पना अपने में कितनी संपूर्णता और गतिशीलता संजोए हुए थी, वह सदा के लिए तकली पर अटक जाने के लिए ही प्रतिपादित नहीं की गई थी। इसमें 'सबके लिए' सबसे महत्वपूर्ण दिशा–निर्देश है। पंक्ति के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति या बच्चे के लिए अब भी बराबरी की शिक्षा और व्यवस्था उससे दूर ही है। यह नई शिक्षा नीति के समक्ष संभवतः उससे भी बड़ी चुनौती है, जितना बड़ा इसे गांधीजी ने अपने समय में देखा और समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया था।

नई तालीम की संकल्पना और संरचना भारत की ज्ञान अर्जन की उस परंपरा पर आधारित थी, जिसकी जड़ें गहराई तक भारत की मिट्टी में गड़ी हुई थी। अगर स्वतंत्रता के समय से संविधान निर्माण तक इसे अपेक्षित परिप्रेक्ष्य में समझा गया होता, तो बुनियादी तालीम से मुंह नहीं मोड़ा गया होता। हर युवक को इससे परिचित अवश्य होना चाहिए कि गोपाल कृष्ण गोखले ने 1915 में मोहनदास करमचंद गांधी को भारत में अपना काम शुरू करने से पहले एक वर्ष भारत को समझने में समय लगाने को कहा था, और गांधी ने उसका अक्षरशः पालन किया। उन्होंने भारत के लोगों की आवश्यकताओं, इच्छाओं, अपेक्षाओं को समझा, उनकी कमजोरियों, अज्ञानता, निराशा, मनोबल की क्षीणता को जाना। अध्यात्म और मानवीय मूल्यों के अंतर्निहित तत्त्वों को पहचाना। भारत में विविधता की स्वीकार्यता के महत्त्व को समझा। नई तालीम के लिए उन्होंने कहा था कि 'हमारी शिक्षा पद्धति बुद्धि, शरीर और आत्मा,

तीनों का विकास करती है।' इसकी तुलना में सामान्य शिक्षा पद्धति केवल बुद्धि की ओर ध्यान देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में इसे स्वीकार गया है। परीक्षा पद्धति बदली जा रही है। मूल्यांकन पद्धति अब अर्जित ज्ञान के उपयोग पर ध्यान देगी, न कि जो केवल याद किए गए को परीक्षा में दोहराने को कहेगी। कौशल सीखना, स्वयं उत्पादकता में भागीदारी करना, संभावनाओं को खंगालना भी आगे महत्व पाएगें। मूल्यों, संस्कारों और चरित्र निर्माण पर ध्यान दिया जाएगा और बच्चे तथा युवा जब इसे आत्मसात कर लेंगे, तब स्वयं वे जीवन के बड़े और गहरे लक्ष्य से अपने को दूर नहीं रख पाएंगे।

गांधीजी शुरू से शिक्षा में मातृभाषा माध्यम को हर कीमत पर लाने के पक्षधर रहे। मातृभाषा माध्यम के महत्व को इक्कीसवीं सदी में नई नीति के अंतर्गत स्वीकार और आग्रहपूर्वक प्रस्तुत किया गया है। इसके क्रियान्वयन में अनेक जटिल प्रश्न जानबूझ कर उछाले जाते हैं, कष्ट तो मासूम बच्चों को ही होता है। अपेक्षा करनी चाहिए कि माता–पिता मातृभाषा माध्यम की मानसिक और संवेदनात्मक आवश्यकता को समझेंगे, और सरकारें यह तय करेंगी कि किसी भी युवा को किसी भी प्रतिस्पर्धा में अंग्रेजी भाषा के कारण कोई हानि नहीं होगी। भारत में करोड़ों बच्चों को अंग्रेजी माध्यम थोपने के कारण स्नायविक ऊर्जा पर जबर्दस्त दबाव झेलना पड़ता है। उन विकसित देशों से प्रेरणा लेनी ही होगी, जो ज्ञान के हर क्षेत्र में; और वैज्ञानिक प्रगति के चरम पर पहंचे हैं, मगर जहां शिक्षा का माध्यम मातृभाषा से ही प्रारंभ होता है। नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में सार्थकता लाने और गतिशीलता बनाए रखने के लिए बुनियादी तलीम के तत्त्व अत्यंत सहायक हो सकते हैं।

▼ मतवादों, आचारों, पंथों तथा गिरजाघरों एवं मंदिरों की चिंता न करो। प्रत्येक मनुष्य के भीतर जो सार वस्तु अर्थात आत्मतत्व विद्यमान है, इसकी तुलना में ये सब तुच्छ हैं और मनुष्य के अन्दर यह भाव जितना ही अधिक व्यक्त होता है वह उतना ही जगत के कल्याण के लिए सामर्थ्यवान हो जाता है।

इसलिए सर्वप्रथम इसी धर्म, घन और भाव का उपार्जन करो, किसी में दोष मत ढूंढ़ों क्योकि सभी मत सभी पंथ अच्छे हैं।

–स्वामी रामकृष्ण परमहंस

fiV

& fo".k HkVV

फाटक खुलने की आवाज के साथ ही एक किशोर लड़के की आवाज सुनाई दी – "पेपर वाला"! मैं फौरन पेपर लेने के लिए फाटक पर जाती हूँ। सामने पिंटू को देखकर बरबस अपनी आँखों पर मुझे विश्वास नहीं होता, क्योंकि पिंटू आज हॉकर के रूप में मेरे सामने खड़ा हुआ था। फिर भी यह हकीकत थी कि अखबार वाला पिंटू ही था और कोई नहीं। बरबस उसे देखेते ही मेरे मुँह से निकल पड़ता है – "अरे पिंटू तुम?"

वह खिलखिलाकर हंसते हुए बोलता है – "कहो दीदी, कैसी रही, दे दिया न सरप्राइज?

"सचमुच पिंटू मुझे तो अब भी विश्वास नहीं हो रहा है। अरे भई, तुमको यह क्या सूझी? अच्छे खाते–पीते, भले घर के लड़के हो, तुम्हारे घर में हर तरह की सुविधाएं हैं, फिर तुमने ऐसा काम हाथ में लिया, क्यों? क्या तुम बता सकते हो?"

"दीदी, आज मैं तुम्हें ही नहीं बल्कि अपने मम्मी–पापा, टीचर और अपने सभी दोस्तों को सरप्राइज दिया है। सभी ने मेरे इस काम को देखकर आश्चर्य व्यक्त किया है।"

"भाई, मुझे तो अब भी तुम्हारे इस काम में किसी उद्देश्य की झलक दिखाई दे रही है! यद्यपि मैं विश्वासपूर्वक नहीं जानती कि इस काम को करने में भला तुम्हारा क्या उद्देश्य हो सकता है? या कहीं मैं सपना तो नहीं देख रही हूं?

"दीदी, आप सपने की दुनिया से वास्तविकता की दुनिया की ओर आ जाओ और आज से मुझे हॉकर के रूप में ही जानो"।

"पिंटू! चलो तुम्हारे कहने से मैं वास्तविकता की ओर आ जाती हूं। लेकिन तुम्हें इस वास्तविकता का राज मुझे कहना होगा।"

"मैं जानता था कि तुम मुझे अवश्य पूछोगी, इसलिए मैं सभी पेपर बांटकर आखिर में आपके यहां आया। जब आपने पूछ ही लिया तो सुनिए–"सबसे पहली बात तो यह है कि मैं यह अनुभव प्राप्त करना चाहता था कि किस तरह वे गरीब लड़के पढ़ते हुए अखबार बेचने का काम करते हैं और अपने माता–पिता की समय–समय पर आर्थिक मद्द करते हैं"।

मैं पूछ बैठती हूं– "वे तो गरीब हैं, इसलिए यदि उनके लड़के ऐसा काम करते हैं तो यह उनकी आवश्यकता है, किन्तु तुम तो बड़े बाप के लड़के हो। तुम्हारे इस काम से लोग हँसेंगे नहीं?" अरे दीदी, इसमें हंसने की क्या बात है? मैं चोरी थोड़े ही कर रहा हूं, जिससे पिताजी की इज्जत में आंच आ जाए। मैंने पहले ही अपने डैडी को राजी कर लिया है।

"तो क्या यह केवल आज के लिए ही है?"

"नहीं दीदी, मेरी तो यह योजना है कि मैं इस काम को नियमितरूप से करूं। यदि बीच में कोई किसी तरह का अडंगा ना लगे तो।"

कुछ क्षण के लिए मैं सोचने लगती हूं पिंटू खाते–पीते घर का लड़का। बंगला, नौकर–चाकर, टेलीफोन, कार और न जाने क्या–क्या? पिंटू पब्लिक स्कूल में सैकेण्डरी में पढ़ रहा है और रोजाना कार से वह स्कूल आता जाता है। फिर पेपर बेचने का काम तो यदि आजभर के लिए हो तो कोई बात नहीं थी। किंतु वह तो इस काम को प्रतिदिन करने पर आमादा है। क्या ऐशो–आराम में पले–बड़े किशोर के लिए यह संभव होगा? मुझे कुछ देर सोचते हुए देखकर पिंटू पूछ बैठता है – "क्यों दीदी, तुम क्या सोचने लगी" "कुछ नहीं रे! तू तो यह बता कि इस काम को करने के पीछे तेरा प्रेरणास्रोत कौन है?"

"दीदी, मेरा एक दोस्त राजेश है, जो मेरे साथ पढ़ता था! किंतु गरीबी की वजह से वह पब्लिक स्कूल में आगे नहीं बढ़ पाया। मजबूर होकर उसने किसी सरकारी स्कूल में एडमिशन लिया। जिस दिन उसने स्कूल छोड़ा, उसकी आंखों में स्कूल छोड़ने का दुख साफ दिखाई दे रहा था। हम दोनों में पक्की दोस्ती थी, इसलिए मुझे भी उसके स्कूल छोड़ने का दुख हुआ। पता नहीं क्यों, वह बड़ा ही स्वाभिमानी निकला। उसने मेरे इस प्रस्ताव को कि मैं उसके लिए स्कूल की फीस का बंदोबस्त कर दूंगा, उसने बड़ी शालीनता से अस्वीकार कर दिया। वहीं इन दिनों एक पेपर एजेंसी की दूकान से पेपर लेकर घर–घर बेचता है और उसे करीब 500 से लगाकर 600 रूपये महीने की आय हो जाती है। इस प्रकार वह न केवल अपना घर खर्च चलाने में अपने मां–बाप की मद्द करता है बल्कि अपने छोटे भाई–बहन और खुद की पढ़ाई का खर्चा भी पूरी तरह से चला लेता है। तभी से मेरे मन में यह जिज्ञासा पैदा हुई। मैं भी अपने आपको इस काबिल बनाउं कि मैं हॉकर के रूप में पार्ट टाइम काम करके गरीब विद्यार्थियों की जिस तरह से हो सके, कॉपी–किताबें, फीस, इत्यादि के लिए अपनी कामाई को सहायता के रूप में खर्च करूं"।

"मैं पूछ बैठती हूं– "तो इसके लिए तुम्हें हॉकर का काम करने की भला क्या आवश्यकता है? तुम्हारे डैडी के पास तो काफी पैसा है। उन्हीं से कहो कि इस शहर के सभी स्कूलों में कुछ फंड वार्षिकरूप से जमा करवा दें, ताकि ऐसे जरूरतमंद लड़कों की आवश्यकतानुसार आर्थिक सहायता की जा सके। तुम चाहो तो अपने डैडी से कहकर बड़े–बड़े लोगों से डोनेशन भी इकठ्ठा करा सकते हो।"

"दीदी, ऐसे काम के लिए अगर मैं अपने डैडी से मद्द लूंगा तो फिर आप ही सोचिए, मेरा क्या योगदान रहा? मैं तो यही चाहता हूं कि मैं कुछ–कुछ परिश्रम करके जो भी आमदनी हो, उसे अपने ही स्कूल के उन गरीब विद्यार्थियों के लिए खर्च करूं, जिनको आर्थिक सहायता की आवश्यकता है।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि तुम इस शुभ काम को अपने ही स्कूल में शुरू करना चाहते हो? लेकिन पिंटू, तुम्हारा स्कूल तो पब्लिक स्कूल है, जहां उन्हीं लोगों के लड़के पढ़ते हैं, जिनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।"

"दीदी, आपका कहना बहुत सही है। किन्तु मेरा यह व्यावहारिक अनुभव है कि गरीब लोग भी अपने लड़कों को पब्लिक स्कूल में इसलिए भर्ती करते हैं कि उनके लड़कों का स्तर ऊंचा हो और भविष्य भी उज्जवल बनें। इसके लिए वे तकलीफें भी सहन करते हैं। उदाहरण के रूप में राजेश का नाम लूंगा। ऐसे मां–बाप के लिए लड़कों की पढ़ाई एक तरह से सिरदर्द रहती है। वे हमेशा यही सोचते रहते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि समय पर फीस जमा ना होने पर उनका लड़का मानसिक रूप से प्रताड़ित हो। ऐसे ही लड़कों को समय–समय पर कुछ ना कुछ आर्थिक सहायता की आवश्यकता होती है। मैं अपनी कमाई से उन्हीं लड़कों की मद्द करना चाहता हूं। क्योंकि मैंने पढ़ा था– "किसी भी अच्छे काम की शुरूआत अपने ही घर से करनी चाहिए। यही सोचकर मैंने संकल्प कर लिया है कि मैं अपने ही स्कूल से क्यों ना शुरू करूँ।"

"विस यू द बेस्ट ऑफ लक"

"थैक्यूं दीदी। अच्छा दीदी, अब मैं चलता हूं। मुझे तैयार होकर स्कूल जाना है।

"अरे भाई, तुमने एक अच्छे काम की शुरूआत की है, इसलिए कम से कम इस खुशी में मिठाई तो खाते जाओ। कहकर मैं प्लेट में बर्फी ले आती हूं।"

बर्फी के एक टुकड़े को अपने मुहं में रखकर पिंटू ने साइकिल के पैडल पर पांव रखा और अपने घर की ओर बढ़ गया। मैं पिंटू के इस सेवा भावी कदम की मन ही मन प्रशंसा करते हुए उसको तब तक जाते हुए देखती रही, जब तक की वह मेरी आंखों से ओझल नहीं हो गया।

–साभार साहित्य अमृत

gekj y[kd

Ñ".k dekj vkgtk] Mh- fyV ¼ekun½
पुस्तकालयाध्यक्ष
राव लाल सिंह शिक्षा महाविद्यालय, सिधरावली
सम्बद्व गुरूग्राम विश्वविद्यालय, गुरूग्राम (हरियाणा)
ईमेल – kkahuja5@gmail.com

ch- l t ;
रिसर्च आफिसर
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली 110002

ohjUn tu
सह–प्राध्यापक शिक्षा विभाग
ओरियंटल यूनिवर्सिटि,
इंदौर, मध्य प्रदेश

txekgu flg jktir
ए–16, सेक्टर पी–7
मित्र एनक्लेव (विपरीत ग्रेटर वैली स्कूल)
ग्रेटर नोयडा – 201310

fo".k HkVV
म.न. 1,
गायत्री नगर, हिरनमगरी, सेक्टर–5
उदयपुर– 313002 (राजस्थान)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
कार्यकारिणी समिति

संरक्षक
प्रो. भवानीशंकर गर्ग

अध्यक्ष
श्री कैलाश चौधरी

उपाध्यक्ष
डा. एम.एस. राणावत
श्रीमती राजश्री बिस्वास
प्रो. एस. वाई. शाह
सुश्री निशात फारूख
डा. वी. रेघु

महासचिव
डा. मदन सिंह

कोषाध्यक्ष
डा. पी. ए. रेड्डी

संयुक्त सचिव
श्री एस. सी. खण्डेलवाल

सह–सचिव
श्री ए. एच. खान
डा. एल. राजा
डा. सरोज गर्ग
श्री मृणाल पन्त

सदस्य
सुश्री आशा वर्मा
डा. उषा राय
डा. डी. के. वर्मा
श्री दुर्लभ चेतिया
डा. डी. उमा देवी
श्री हरीश कुमार एस.
प्रो. असोक भटट्ाचार्य
श्री राजेन्द्र जोशी

सहयोजित सदस्य
श्री हरीशचन्द्र पारिख
डा. भारती जोशी
श्री वी. बालासुब्रमनियण
श्री यशवंत जनानी

प्रौढ़ शिक्षा जुलाई-दिसम्बर 2020, आरएनआई 4551/57

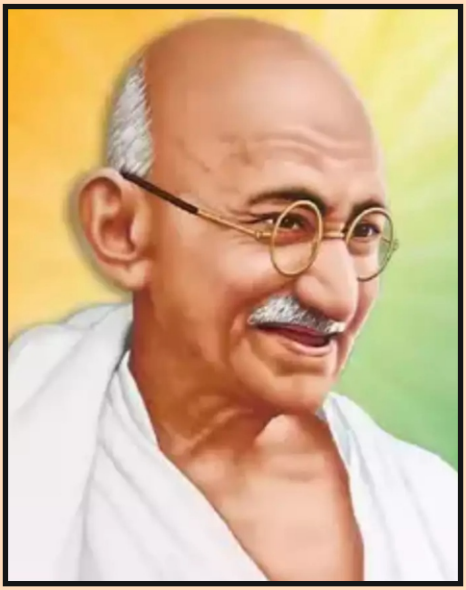

मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करुंगा जिसमें गरीब से गरीब लोग भी यह महसूस करेंगे कि भारत उनका देश है, जिसके निर्माण में उनकी आवाज का महत्व है। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करुंगा कि जिसमें ऊंचे और नीचे वर्गों का भेद नहीं होगा और जिसमें विविध सम्प्रदायों में पूरा मेलजोल होगा।

—महात्मा गांधी

स्वत्वधिकारी भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संध के लिए डा. मदन सिंह द्वारा 17—बी आई पी एस्टेट, नई दिल्ली—2 से प्रकाशित, सम्पादित और उनके द्वारा प्रभात पब्लिसिटी, 2622 कूचा चेलान , दरियागंज, नई दिल्ली—2 से मुद्रित ।

सम्पादकः डा. मदन सिंह